नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 344, नई दिल्ली, गुरुवार 12 फरवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जिस इंसान के पास आशा होती है, वह कभी पराजित नहीं होता है!

02 मेथी साग सर्दियों का नेचुरल हीट बूस्टर + शुगर कंट्रोल का बादशाह

06 मध्यप्रदेश के बजट से किसानों को क्या उम्मीदें हैं?

08 उन्होंने लोगों से हाथियों के पास न जाने और उनके साथ सेल्फी न लेने की अपील की है:मंत्री

परिवहन आयुक्त द्वारा विभाग में तकनीकी पदों पर गैर तकनीकी को नियुक्त कर जनता को सीधे और परोक्ष दोनों तरह के नुकसान में डाल दिया, जाने विश्लेषण

संजय कुमार बाठला

दिल्ली सरकार के परिवहन विभाग में एमवीआई (Motor Vehicle Inspector) के लिए तकनीकी योग्यता दिल्ली के आधिकारिक भर्ती नियमों में साफ-साफ दी गई हैं, जबकि एमएलओ/डीटीओ के लिए नियम हाल में संशोधित हुए हैं और उनमें तकनीकी योग्यता का स्तर पद की प्रकृति के अनुसार रखा गया है।

एमवीआई (Motor Vehicle Inspector) – दिल्ली दिल्ली सरकार के 2021 के भर्ती नियमों के अनुसार एमवीआई के लिए अनिवार्य तकनीकी योग्यता यह है:

1. मान्यता प्राप्त बोर्ड से 10th पास
2. 3 वर्ष का डिप्लोमा (Diploma) ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग या मैकेनिकल इंजीनियरिंग में, जो केंद्र या राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थान से हो।
3. ऐसा वैध ड्राइविंग लाइसेंस, जो गियर वाली मोटर साइकिल और हल्के मोटर वाहन (Light Motor Vehicles) चलाने की अनुमति देता हो।
4. ये सभी शर्तें "Essential Qualification" के रूप में लिखी गई हैं, यानी इनके बिना सामान्यतः सीधे भर्ती (Direct Recruitment) नहीं हो सकती।

एमएलओ / डीटीओ (Motor Licensing Officer / District Transport Officer) – दिल्ली में एमएलओ के पद को हाल में पुनर्गठित कर डिस्ट्रिक्ट ट्रांसपोर्ट ऑफिसर (DTO) के रूप में रीडिज़ाइनेट किया गया है; यह पद फील्ड-लेवल पर लाइसेंस, रजिस्ट्रेशन, एन्फोर्समेंट आदि का दायित्व निभाता है।

2025 में जारी डीटीओ के संशोधित भर्ती नियमों के अनुसार, डिप्यूटेशन/प्रमोशन के लिए उम्मीदवार के पास आम तौर पर लेवल-6 या समकक्ष पद पर सेवा के साथ मेकैनिकल या ऑटोमोबाइल से संबंधित डिप्लोमा / तकनीकी योग्यता की शर्तें रखी गई हैं (सटीक शब्दावली नोटिफिकेशन में दी गई है)।

डीटीओ जैसे पदों के लिए जब नियमों में स्पष्ट तकनीकी योग्यता (मेकैनिकल/ऑटोमोबाइल डिप्लोमा आदि) अनिवार्य की गई हो, और फिर भी बिना इस योग्यता वाले अधिकारियों को नियुक्त किया जाए, तो इससे जनता को सीधे और परोक्ष दोनों तरह के नुकसान हो सकते हैं।

सड़क सुरक्षा और फिटनेस पर असर डीटीओ/आरटीओ अधिकारी वाहन पंजीकरण, फिटनेस सर्टिफिकेट, ओवरलोडिंग, ब्रेक-लाइट, टायर, उत्सर्जन आदि की निगरानी करते हैं; तकनीकी समझ कम होने पर अनफिट वाहन भी सड़क पर चलने की अनुमति पा सकते हैं, जिससे दुर्घटनाओं और जान-माल की हानि का जोखिम बढ़ जाता है।

तकनीकी ज्ञान न होने से नए वाहन मानक, सुरक्षा फीचर, और उत्सर्जन नियम (जैसे BS-VI, क्रैश नॉर्म्स) समझने व लागू करने में चूक हो सकती है, जो मोटर व्हीकल एक्ट के उद्देश्य – सुरक्षित और पर्यावरण-अनुकूल परिवहन – के विपरीत है।

भ्रष्टाचार, मनमानी और पारदर्शिता की कमी तकनीकी मानकों की सूक्ष्म समझ न होने पर निरीक्षण अधिक "काग़ज़ी" या व्यक्तिपरक हो जाता है; ऐसी स्थिति में जानकार दलाल तथा वाहन मालिक नियमों की कमज़ोर समझ का फायदा उठाकर घूस या दबाव के जरिए गलत काम निकलवा सकते हैं।

जब बिना योग्यता वाले लोग तकनीकी फैसले ले रहे हैं, तो विभाग की निष्पक्षता और विश्वास नीयता पर सवाल उठते हैं, जिससे शिकायतें, मुकदमे और प्रशासनिक अविश्वास बढ़ सकता है।

नीति-निर्माण और रोड सेफ्टी रणनीति पर प्रभाव डीटीओ स्तर पर दुर्घटना विश्लेषण, ब्लैक-स्पॉट की पहचान, वाहन-डिज़ाइन से जुड़े पैटर्न, और स्थानीय रोड सेफ्टी एक्शन प्लान बनाना होता है; तकनीकी पृष्ठभूमि न होने पर यह विश्लेषण सतही रह जाता है और प्रभावी नीति नहीं बन पाती।

सुप्रीम कोर्ट कमेटी ऑन रोड सेफ्टी और अन्य विशेषज्ञ निकायों ने ही सिफारिश की है कि मोटर वाहन विभाग के उच्च पदों पर तकनीकी योग्यता ज़रूरी हो, ताकि वे वैज्ञानिक साक्ष्यों और इंजीनियरिंग सिद्धांतों के आधार पर निर्णय ले सकें; इस मानक से विचलन जनता के हित के विपरीत माना जाता है।

कानून के उद्देश्य और बराबरी के अधिकार पर चोट मोटर व्हीकल एक्ट एक कल्याणकारी (welfare) कानून है, जिसका मकसद लोगों की जान की सुरक्षा और सुव्यवस्थित यातायात है; जब जानबूझकर तकनीकी योग्यता की शर्तों को अनदेखा कर नियुक्ति होती है, तो कानून का यही मूल उद्देश्य कमजोर हो जाता है।

योग्य तकनीकी उम्मीदवारों के लिए यह अनुचित प्रतिस्पर्धा (unfair competition) बनती है, जिससे उनके समान अवसर (आर्टिकल 14 और 16 के तहत) प्रभावित होते हैं; लंबी अवधि में इससे विभाग में प्रतिभाशाली तकनीकी लोगों के आने की प्रेरणा भी घटती है, जिसका नुकसान अंततः जनता को ही उठाना पड़ता है।

आरएनआई द्वारा अनुमोदित दो भाषाओं में प्रकाशित समाचार पत्र "परिवाहन विशेष" के वार्षिक समारोह की घोषणा

"मार्च अंत या अप्रैल की शुरुआत"

आरएनआई द्वारा अनुमोदित हिंदी भाषा के दैनिक समाचार पत्र "परिवहन विशेष" के तीसरे वार्षिक समारोह और आरएनआई द्वारा अनुमोदित अंग्रेजी भाषा के दैनिक समाचार पत्र "परिवहन विशेष" के पहले समारोह के विषय और थीम निम्नलिखित हैं:

"सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा"
एवम
"सामाजिक कार्यकर्ताओं और कार्यरत समूहों को पुरस्कार"

सुनीता शर्मा टेंपल ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट की सचिव नियुक्त, सामाजिक कार्यों को मिलेगी नई गति

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। टेम्पल ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की कार्यकारिणी में महत्वपूर्ण नियुक्ति करते हुए सुनीता शर्मा को ट्रस्ट का सचिव नियुक्त किया गया है। यह नियुक्ति ट्रस्ट की राष्ट्रीय महासचिव पिंकी कुंडू द्वारा की गई।

ट्रस्ट के पदाधिकारियों के अनुसार, सुनीता शर्मा लंबे समय से नजफगढ़ क्षेत्र में सामाजिक कार्यों से सक्रिय रूप से जुड़ी रही हैं। समाजसेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, कार्यक्षमता और संगठनात्मक कौशल को देखते हुए सर्वसम्मति से उन्हें यह जिम्मेदारी सौंपी गई है।

नियुक्ति पत्र के अनुसार, सुनीता शर्मा ट्रस्ट में सचिव पद की जिम्मेदारी निभाने के साथ-साथ राष्ट्रीय महासचिव की निजी सचिव के रूप में भी कार्य करेंगी।

ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने विश्वास जताया है कि सुनीता शर्मा के नेतृत्व में संगठन के सामाजिक एवं जनकल्याणकारी कार्यों को नई दिशा और गति मिलेगी।

इस अवसर पर ट्रस्ट के सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं ने उन्हें शुभकामनाएं दीं और उनके सफल कार्यकाल की कामना की।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html I
tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार: साइबर अपराधों पर सुप्रीम कोर्ट का रुख: बिखरे प्रयासों से ठोस व्यवस्था तक

भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने, IN THE MATTER OF: VICTIMS OF DIGITAL ARREST SCAMS RELATED TO FORGED DOCUMENTS याचिका की सुनवाई करते हुए, यह टिप्पणी की कि डिजिटल धोखाधड़ी में अब तक ₹54,000 करोड़ की लूट हो चुकी है—यह राष्ट्रीय खतरे की घंटी है। न्यायालय ने इसे "सीधी डकैती" कहा, जो इस बात का संकेत है कि साइबर अपराध अब छिटपुट घटनाओं से आगे बढ़कर एक प्रणालीगत आर्थिक संकट बन चुका है।

न्यायालय की प्रमुख टिप्पणियाँ

- बिखरी हुई प्रतिक्रिया विफल रही: अपराधी तेजी से धन स्थानांतरित कर लेते हैं, जबकि बैंक और नियामक धीमी प्रतिक्रिया देते हैं।
- विश्वास का संकट: नागरिक भरोसे से बैंक में पैसा जमा करते हैं। लापरवाह ऋण, कमजोर धोखाधड़ी पहचान और नाममात्र की सजा इस भरोसे को तोड़ रही है।
- एआई को अग्रिम रक्षा बनाना होगा: अदालत ने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल्स केवल औपचारिकता नहीं हों। वेलोसिटी चेक, असामान्य लेनदेन की पहचान और ट्रांज़ैक्शन रोकने की क्षमता अनिवार्य है।
- पीड़ित मुआवजा ढाँचा: न्याय केवल अपराधियों को दंडित करने तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि पीड़ितों की गरिमा और आर्थिक सुरक्षा भी लौटानी चाहिए।
- अंतर-एजेंसी समन्वय: आरबीआई, गृह मंत्रालय और प्रवर्तन एजेंसियों को मिलकर काम करना होगा।

क्यों यह महत्वपूर्ण है

- राज्यों के बजट से बड़ा नुकसान: साइबर अपराध अब सीमित खतरा नहीं, बल्कि शासन की वित्तीय चुनौतियों के बराबर है।
- आर्थिक स्थिरता दांव पर: यदि इसे रोका नहीं गया तो डिजिटल अर्थव्यवस्था और बैंकिंग प्रणाली पर जनता का विश्वास डगमगा जाएगा।
- संस्कृति में बदलाव आवश्यक: बैंक केवल लाभ कमाने वाली संस्थाएँ नहीं, बल्कि जनता के विश्वास के संरक्षक हैं।

आगे का रास्ता

1. एकीकृत राष्ट्रीय एसओपी: सभी बैंकों और एजेंसियों में मानकीकृत प्रोटोकॉल तुरंत लागू हों।
2. एआई आधारित रोकथाम: वेलोसिटी चेक, व्यवहार विश्लेषण और ट्रांज़ैक्शन रोकने वाले टूल्स अनिवार्य हों।
3. पारदर्शी जवाबदेही: संदिग्ध बैंकों की सार्वजनिक पहचान और सख्त दंड।
4. पीड़ित-केंद्रित न्याय: नागरिकों के लिए मुआवज़ा ढाँचा तैयार किया जाए।
5. नागरिक सशक्तिकरण: डिजिटल गिरफ्तारी, म्यूल अकाउंट्स और सुरक्षित लेनदेन पर जागरूकता अभियान।

साइबर अपराध अब छिपा हुआ खतरा नहीं, बल्कि दिन-दहाड़े राष्ट्रीय संपत्ति की लूट है। सुप्रीम कोर्ट ने इसे "डकैती" कहा। अब भारत को बिखरे हुए प्रयासों से आगे बढ़कर ठोस साइबर सुरक्षा व्यवस्था बनानी होगी, जहाँ एआई टूल्स, एजेंसियों का समन्वय और नागरिक सशक्तिकरण मिलकर हर रुपये की रक्षा करें।

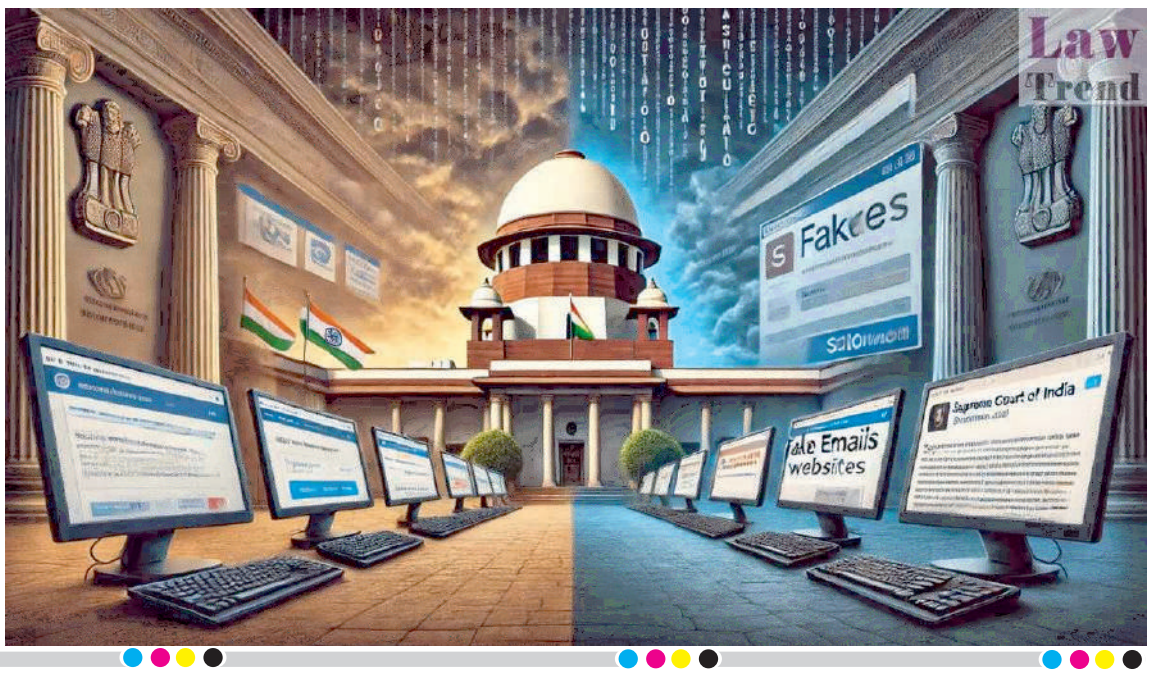

पिंकी कुंडू

मेथी साग सर्दियों का नेचुरल हीट बूस्टर + शुगर कंट्रोल का बादशाह

हरे-हरे छोटे पत्तें हल्की कड़वाहट लेकिन सेहत के मामले में मेथी साग पूरा पावरहाउस!

सर्दियों में यह सिर्फ सब्ज़ी नहीं, बल्कि बॉडी क्लीनर + ब्लड शुगर बैलेंसर + इम्यूनिटी बूस्टर का एकदम देसी सोर्स है।

गांव की दादियाँ कहती हैं —

₹जो मेथी साग खाये, उसकी सर्दी-खाँसी दूर भाग जाये !₹

👉 क्यों मेथी साग एक SuperFood है?

मेथी साग में हैं — Vitamin A, C, K, आयरन, कैल्शियम, फाइबर, एंटीऑक्सीडेंट + एंटीडायबिटिक गुण

लीवर, किडनी और स्किन को साफ़ रखने वाले तत्व

हल्का कड़वा स्वाद → लेकिन असर?

100% असली, बॉडी में फील होने वाला!

👉 **मेथी साग के प्रमुख फायदे**

1. शुगर कंट्रोल का मास्टर

मेथी साग इंसुलिन सेंसेटिविटी बढ़ाता है,

ब्लड शुगर को नेचुरली बैलेंस करता है —

इसलिए डायबिटीज वालों के लिए बहुत फायदेमंद।

2. पाचन मजबूत करता है

कड़वाहट पेट की गर्मी ठीक करती है,

कब्ज, गैस, एसिडिटी को कम करती है।

3. खून साफ़ + स्किन ग्लो

मेथी का साग शरीर से टॉक्सिन निकालता है,

जिससे स्किन साफ़, दाने कम और नेचुरल ग्लो बढ़ता है।

4. सर्दियों में गर्माहट देता है

नेचुरल हीटिंग प्रॉपर्टी के कारण

सर्दी-खाँसी, जुकाम, बॉडी पेन कम करता है।

5. हड्डियों और बालों के लिए बेहतरीन

कैल्शियम + आयरन से

हड्डियाँ मजबूत, बाल झड़ना कम, हेयर ग्रोथ जल्दी होती है।

👉 मेथी साग को खाने के देसी तरीके

1.मेथी आलू की सूखी सब्ज़ी

हल्की मसाले वाली — रोटी के साथ बेहतरीन।

2. मेथी पराठा

सुबह के नाश्ते में— स्वाद, सेहत, तृप्ति सब कुछ एक साथ।

3. मेथी दाल तड़का

दाल में एक मुट्ठी मेथी डालते ही स्वाद + न्यूट्रीशन डबल।

4. मेथी पालक मिक्स सब्ज़ी

दोनों हरी सबज़ियों का जबरदस्त कॉम्बिनेशन।

5. मेथी का साग + लहसुन तड़का

सर्दियों की सबसे खुशबूदार और हल्की डिश।

6. मेथी थेपला / मेथी पूड़ी

गुजराती स्टाइल— बच्चे भी शौक से खाते हैं।

👉 **सही मात्रा (Daily Use Guide)**

1–2 कटोरी पकी हुई मेथी सब्ज़ी

हफ्ते में 3–4 बार खाना सबसे अच्छा

अगर गैस/एसिडिटी ज्यादा होती है—

मेथी को दही या छाछ के साथ खाना बेहतर

👉 सर्दियों में फिट रहना है? बस मेथी साग को थाली में शामिल कर लीजिए...क्यूंकि ये है असली देसी सुपरफूड!

निवेदन: आगे शेयर जरूर करे

प्राकृतिक पोषण: "फूड फर्स्ट" की वैज्ञानिक और नैतिक समझ

इस लेख में एक त्वचा रोग विशेषज्ञ द्वारा कुछ विशेष औषधि कंपनियों के सप्लीमेंट्स का उल्लेख एवं परोक्ष समर्थन किया गया है। इस प्रकार की सिफारिशें चिकित्सा नैतिकता (Medical Ethics) के मूल सिद्धांतों के विपरीत प्रतीत होती हैं, क्योंकि सार्वजनिक लेखन में किसी विशिष्ट ब्रांड या कंपनी का प्रचार हितों के टकराव (Conflict of Interest) की आशंका उत्पन्न करता है। ऐसी परिस्थितियों में यह प्रश्न स्वाभाविक है कि क्या लेखन पूर्णतः वैज्ञानिक निष्पक्षता पर आधारित है या इसके पीछे किसी प्रकार के प्रोत्साहन की संभावना है।

मानव स्वास्थ्य में "फूड फर्स्ट" की अवधारणा

मानव स्वास्थ्य के क्षेत्र में लंबे समय से यह बहस चली आ रही है कि क्या अलग-अलग रूपों में दिए जाने वाले सप्लीमेंट्स (टैबलेट, कैप्सूल, पाउडर) प्राकृतिक भोजन से प्राप्त पोषण का स्थान ले सकते हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से यह स्पष्ट है कि यद्यपि कुछ विशिष्ट चिकित्सीय स्थितियों में सप्लीमेंट्स की भूमिका हो सकती है, विटामिन, खनिज, प्रोटीन और सूक्ष्म पोषक तत्वों का सर्वोत्तम स्रोत प्राकृतिक भोजन ही है, न कि कृत्रिम गोलियाँ।

इस सोच को "फूड फर्स्ट न्यूट्रिशन" कहा जाता है, जो कई स्थापित वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित है।

1. संपूर्ण खाद्य पदार्थ जटिल होते हैं, सप्लीमेंट्स नहीं

फल, सबज़ियाँ, साबुत अनाज, दालें, बीज और मेवे केवल पोषक तत्वों का संग्रह नहीं होते, बल्कि इनमें शामिल होते हैं:

विटामिन

खनिज

एंटीऑक्सीडेंट

फाइटोकेमिकल्स (पौधों में पाए जाने वाले विशिष्ट यौगिक)

फाइबर

जैव-सक्रिय तत्व, जो एक-दूसरे के साथ मिलकर कार्य करते हैं

जब हम एक सेब खाते हैं या मुट्ठी भर बादाम लेते हैं, तो शरीर को पोषक तत्वों का एक संतुलित और परस्पर सहयोगी तंत्र प्राप्त होता है, जिससे:

- अवशोषण बेहतर होता है
- पोषक तत्वों का उपयोग प्रभावी होता है
- चयापचय संतुलित रहता है

इसके विपरीत, सप्लीमेंट्स केवल अलग-थलग पोषक तत्व प्रदान करते हैं, जिनमें यह प्राकृतिक सामंजस्य नहीं होता।

2. मात्रा से अधिक महत्वपूर्ण है संतुलन

प्राकृतिक भोजन के माध्यम से:

- पोषक तत्व संतुलित अनुपात में मिलते हैं
- शरीर स्वयं अवशोषण को नियंत्रित करता है
- किसी एक तत्व की अधिकता का जोखिम न्यूनतम रहता है

वहीं सप्लीमेंट्स से:

अधिक आयरन जिंक के अवशोषण को बाधित कर सकता है

उच्च मात्रा में विटामिन E, विटामिन K की क्रिया को प्रभावित कर सकता है

अत्यधिक कैल्शियम सप्लीमेंट्स को हृदय-धमनियों की समस्याओं से जोड़ा गया है

प्राकृतिक भोजन से ऐसे असंतुलन प्रायः नहीं होते।

3. फाइबर: जिसे कोई सप्लीमेंट नहीं दे सकता

सप्लीमेंट्स फाइबर का विकल्प नहीं हो सकते, जबकि फाइबर:

👉 पाचन को सुधारता है

👉 आंतों के लाभकारी बैक्टीरिया को पोषण देता है

👉 हृदय स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है

👉 रक्त शर्करा को नियंत्रित करता है

कोई भी कैप्सूल उस जटिल प्रक्रिया की नकल नहीं कर सकता जिससे फाइबर आंतों के सूक्ष्मजीवों (Microbiome) के साथ कार्य करता है।

4. नवीन वैज्ञानिक शोध: माइक्रोबायोम और पोषण

हाल के वर्षों में विज्ञान ने यह स्पष्ट किया है कि आंतों का माइक्रोबायोम—

- भोजन को पचाने
- आवश्यक यौगिक बनाने
- प्रतिरक्षा प्रणाली को सशक्त करने
- मस्तिष्क से संवाद करने

में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पूरे खाद्य पदार्थ माइक्रोबायोम की विविधता और स्वास्थ्य को बढ़ाते हैं, जबकि सप्लीमेंट्स यह प्रभाव नहीं दिखा पाते।

5. सप्लीमेंट्स: केवल लक्षित चिकित्सीय आवश्यकता में

कुछ स्थितियों में सप्लीमेंट्स आवश्यक हो सकते हैं, जैसे:

धूप की कमी में विटामिन D

शुद्ध शाकाहारियों में विटामिन B12

जाँच द्वारा पुष्टि की गई आयरन की कमी

गर्भावस्था में फोलिक एसिड

लेकिन इनका उपयोग होना चाहिए:

✓ चिकित्सकीय परामर्श के साथ

✓ नियमित निगरानी में

✓ केवल प्रमाणित कमी की स्थिति में

6. सुरक्षा और अवशोषण से जुड़े प्रश्न

प्राकृतिक भोजन से प्राप्त पोषक तत्व अधिक सुरक्षित और प्रभावी ढंग से अवशोषित होते हैं।

उदाहरण के लिए:

फलों से मिलने वाला विटामिन C, बायोफ्लेवोनॉयड्स के साथ बेहतर कार्य करता है

सबज़ियों से मिलने वाला फोलेट, कृत्रिम फोलिक एसिड की तुलना में अधिक सुरक्षित है

साथ ही, कई सप्लीमेंट्स में कृत्रिम भराव पदार्थ भी होते हैं।

📌 निष्कर्ष: विज्ञान, प्रकृति और नैतिकता का समन्वय

संक्षेप में:

- संपूर्ण खाद्य पदार्थ संतुलित और सुरक्षित पोषण देते हैं
- गोलियाँ प्राकृतिक पोषण की नकल नहीं कर सकतीं
- सप्लीमेंट्स केवल चिकित्सीय आवश्यकता तक सीमित होने चाहिए
- आधुनिक विज्ञान "फूड ऐज़ मेडिसिन" को स्वीकार कर रहा है

अतः किसी भी चिकित्सा लेखन में प्राकृतिक पोषण को प्राथमिकता देना और व्यावसायिक प्रभाव से मुक्त रहना न केवल वैज्ञानिक दृष्टि से आवश्यक है, बल्कि चिकित्सा नैतिकता की भी अनिवार्य शर्त है।

अगर आप ऐसा करेंगे तो आपको ज़िंदगी में कभी स्किन की बीमारी नहीं होगी

पिंकी कुंडू

बहुत सस्ता लेकिन बहुत असरदार घरेलू नुस्खा, जिसे हम अनजाने में नज़रअंदाज़ कर देते हैं। अब इसे नज़रअंदाज़ न करे, क्योंकि यह नुस्खा आपको ज़िंदगी भर बचा सकता है!

सिर्फ़ 8 दिन ऐसे नहाएं और स्किन की बीमारियों से खुद को बचाएं

स्किन में खुजली, दरार, फंगल इंफेक्शन क्यों होता है? शरीर में माइक्रोस्कोपिक बैक्टीरिया/फंगस के बढ़ने से –

* खुजली
* निशान
* स्कैल्प
* पिंपल्स
* बदबू
* डैंड्रफ

ये दिक्कतें होती हैं, अगर आप यह उपाय करेंगे तो ये सारी परेशानियां धीरे - धीरे बंद हो जाएंगी।

सिर्फ 10 रुपये में औषधीय स्नान फिटकरी (किराने की दुकानों में आसानी से मिल जाती है) 10 रुपये में 50–100 ग्राम

कैसे तैयार करें?

प्लास्टिक की बोतल में

* फिटकरी के छोटे - छोटे टुकड़े डालें
* इसमें पानी मिलाएं
* थोड़ी ही देर में फिटकरी का औषधीय घोल तैयार हो जाएगा

इसे ज़्यादा असरदार बनाने के लिए कहां लगाएं?

* सिर
* बगल
* जांघों के बीच
* जिन जगहों पर बहुत पसीना आता है
* बगल में लगाने से शरीर की बदबू कम होती है

आइटम एक – कई फायदे

* लगाने के 5 मिनट के अंदर सॉल्यूशन सूख जाता है
* सूखने पर सफेद क्रिस्टल दिखाई देते हैं
* फिर नहा लें
* ऐसे नहाएं
* लगातार 8 दिन
* साल में 4 बार
* अगर किया जाए
* कजकर्ण
* नीता
* फंगल इन्फेक्शन
* शरीर की बदबू
* बालों में डैंड्रफ / रूसी

इन समस्याओं की संभावना बहुत कम हो जाती है।

थोड़ा सावधान रहें,

* फिटकरी का पानी आँखों में न जाने दें
* सिर धोते समय आँखों को अच्छी तरह पोंछ लें
* अगर यह आँखों में चला जाए तो जलन होती हैं।

अत्यधिक सप्लीमेंट्स स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं

यह कथन कि कुछ विटामिन और खनिजों का अत्यधिक सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है, केवल एक सावधानी भर नहीं है, बल्कि यह एक ठोस चिकित्सीय सत्य है, जिसे आधुनिक अनुसंधान और नैदानिक अनुभव निरंतर प्रमाणित कर रहे हैं।

यद्यपि सूक्ष्म पोषक तत्व (Micronutrients) शरीर की जैविक संतुलन प्रणाली के लिए अनिवार्य हैं—जैसे कि एंजाइम क्रियाओं का संचालन, प्रतिरक्षा प्रणाली को सुदृढ़ करना और अस्थि-स्वास्थ्य बनाए रखना—फिर भी आवश्यकता से अधिक मात्रा शरीर की नाजुक जैव-रासायनिक समरसता को बिगाड़ सकती है, जिससे विषाक्तता या उल्टा नुकसान हो सकता है।

विशेष रूप से वसा-घुलनशील विटामिन (A, D, E, K) अधिक खतरनाक होते हैं, क्योंकि वे शरीर में जमा हो जाते हैं, जबकि कुछ जल-घुलनशील विटामिन और खनिज अत्यधिक मात्रा में लिए जाने पर प्रतिकूल प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं।

वसा-घुलनशील विटामिन: संचय और विषाक्तता का गंभीर खतरा

विटामिन A (रेटिनॉल)

लंबे समय तक अत्यधिक सेवन से हाइपरविटामिनोसिस A हो सकता है, जिसके लक्षण हैं:

त्वचा का छिलना

बाल झड़ना

यकृत को क्षति

हड्डियों की कमजोरी (विरोधाभासी रूप से ऑस्टियोपोरोसिस)

गर्भवती महिलाओं में जन्म-दोष (Teratogenic effects)

तीव्र विषाक्तता में सिरदर्द,

उल्टी, चक्कर और मस्तिष्कीय दबाव बढ़ना देखा गया है।

हालिया शोध (2023–2025) दर्शाते हैं कि उच्च-शक्ति वाले सप्लीमेंट्स और अत्यधिक लीवर उत्पादों के सेवन से यह खतरा बढ़ रहा है।

विटामिन D

अत्यधिक विटामिन D लेने से हाइपरकैल्सीमिया होता है, जिससे:

बार-बार पेशाब

प्यास

गुर्दे में पथरी

किडनी फेल्योर

हृदय की धड़कन में गड़बड़ी

गंभीर मामलों में कोमा या मृत्यु

नियंत्रित अध्ययनों में यह पाया गया है कि 4,000–10,000 IU/दिन से अधिक लेने पर हड्डियों का घनत्व घट सकता है और गिरने का जोखिम बढ़ जाता है।

2024–2025 की केस रिपोर्ट्स में बिना चिकित्सकीय सलाह के सप्लीमेंट लेने वाले किशोरों और वयस्कों में विटामिन D का स्तर 500 ng/mL से अधिक पाया गया, जो अत्यंत खतरनाक है। दक्षिण कोरिया जैसे देशों में जनसंख्या-स्तर पर विषाक्त स्तरों की बढ़ती प्रवृत्ति दर्ज की गई है।

विटामिन E

अत्यधिक मात्रा रक्त के थक्के बनने की प्रक्रिया में बाधा डालती है और रक्तस्राव का जोखिम बढ़ाती है। कुछ अध्ययनों में उच्च मात्रा को समग्र मृत्यु-दर में वृद्धि से भी जोड़ा गया है।

जल-घुलनशील विटामिन: 'सुरक्षित' होने का भ्रम

विटामिन B6 (पाइरिडॉक्सिन)

50–100 mg/दिन से अधिक लंबे समय तक लेने पर:

नसों को नुकसान

हाथ-पैर में झनझनाहट

संतुलन बिगड़ना

2025 की रिपोर्ट्स में उच्च-डोज़ सप्लीमेंट लेने वालों में गंभीर न्यूरोपैथी दर्ज की गई, जिसके कारण यूरोप में इसकी सुरक्षित ऊपरी सीमा घटाकर 12 mg/दिन कर दी गई है।

विटामिन C

2,000 mg/दिन से अधिक लेने पर:

दस्त

पेट दर्द

उल्टी

गुर्दे की पथरी का खतरा

नायसिन (B3) और फोलिक एसिड

अधिक मात्रा से:

यकृत को क्षति

त्वचा पर जलन

कुछ मामलों में तंत्रिका संबंधी विकार

खनिज तत्व: अंगों पर सीधा आघात

आयरन

अधिक मात्रा:

यकृत में ऑक्सीडेटिव क्षति

सिरोसिस

हृदय रोग

बच्चों में आकस्मिक ओवरडोज़ प्राणघातक

कैल्शियम

1,000–1,500 mg/दिन से अधिक सप्लीमेंट्स से:

गुर्दे की पथरी

रक्त-वाहिकाओं में कैल्सीफिकेशन

हृदय रोग

प्रोस्टेट कैंसर का संभावित जोखिम

जिंक

75–100 mg/दिन से अधिक:

कॉपर का अवशोषण रुकता है

एनीमिया

प्रतिरक्षा कमजोरी

आक्रामक प्रोस्टेट कैंसर का जोखिम

नवीनतम वैज्ञानिक निष्कर्ष (2023–2025)

20 वर्षों तक 3.9 लाख से अधिक अमेरिकियों पर हुए अध्ययन में मल्टीविटामिन से मृत्यु-दर में कोई लाभ नहीं पाया गया

हृदय रोग, कैंसर या फ्रैक्चर रोकने में सप्लीमेंट्स प्रभावहीन

धूम्रपान करने वालों में β-कैरोटीन → फेफड़ों के कैंसर का खतरा

उच्च-डोज़ विटामिन D → हड्डियों का क्षय

USPSTF ने दोहराया कि प्राथमिक रोकथाम में नुकसान लाभ से अधिक हो सकता है

📌 **निष्कर्ष:**

मात्रा ही विष बनती है

प्रसिद्ध चिकित्सीय सिद्धांत "The dose makes the poison" यहाँ पूर्णतः लागू होता है।

✓ संतुलित प्राकृतिक आहार सर्वोत्तम है

✓ सप्लीमेंट्स केवल प्रमाणित कमी में

✓ चिकित्सकीय निगरानी अनिवार्य

✓ अंधाधुंध सेवन हानिकारक

अत्यधिक या अनियंत्रित सप्लीमेंट्स न केवल आर्थिक अपव्यय हैं, बल्कि शरीर पर गंभीर और दीर्घकालिक दुष्प्रभाव भी डाल सकते हैं।

तेल से अभिषिक्त महावीर: हनुमान जी और शनि मुक्ति की दिव्य कथा

पिंकी कुंडू

यह कथा उस काल की है जब त्रिलोक में शनि देव का भय व्याप्त था। राजा हों या रंक, देवता हों या दैत्य — शनि की वक्र दृष्टि से कोई भी अछूता नहीं था। जहाँ शनि की छाया पड़ती, वहाँ वैभव राख हो जाता, और जहाँ उनका प्रकोप होता, वहाँ वर्षों का पुरुषार्थ क्षणों में नष्ट हो जाता।

रावण का अहंकार और शनि का बंदीगृह लंका का अधिपति रावण केवल बल और अस्त्रों से ही नहीं, बल्कि तंत्र, अभिचार और ग्रह शक्तियों पर भी अधिकार चाहता था। उसने नवग्रहों को बंदी बना लिया था, ताकि उसकी कुंडली में कोई दोष न रहे।

शनि देव को उसने सबसे कठोर बंधन में रखा —

* एक अंधे कारागार में, जहाँ न प्रकाश था, न पूजा, न स्वतंत्रता।

* शनि देव का तेज क्षीण हो चला था, पर उनका धर्म अडिग था।

हनुमान जी का लंका आगमन उधर माता सीता की खोज में महावीर हनुमान लंका पहुँचे। जब उन्होंने लंका के कारागारों का निरीक्षण किया, तो एक कोठरी से उन्हें करुण पुकार सुनाई दी। वहाँ उन्होंने शनि देव को जंजीरों में जकड़ा पाया।

शनि देव बोले — "वीर वानर! यदि तुम सचमुच रामदूत हो, तो मुझे इस अधर्म से मुक्त करो। रावण ने मुझे केवल इसलिए कैद किया है क्योंकि मैं उसके अहंकार को सहन नहीं कर सका।" हनुमान जी ने बिना विलंब शनि के बंधन तोड़ दिए।

लंका दहन और तेल का रहस्य जब रावण ने हनुमान जी की पूँछ में तेल लगवाकर आग लगवाई, तब उसने सोचा कि यह वानर जलकर भस्म हो जाएगा।

परंतु वही तेल —

* हनुमान जी की तप - ऊर्जा से अभिषेक बन गया

* अग्नि उनकी शक्ति का वाहन बन गई

हनुमान जी ने उसी जलती पूँछ से पूरी लंका जला दी।

शनि देव का वरदान लंका दहन के बाद शनि देव हनुमान जी के चरणों में गिर पड़े। उन्होंने कहा — "हे महाबली! आज तुमने न केवल मुझे मुक्त किया, बल्कि मेरे अहंकार को भी जला दिया। मैं तुम्हें वर देना चाहता हूँ।"

हनुमान जी ने कहा — "यदि वर देना ही है, तो यह वर दो कि जो भक्त मुझे तेल और सिंदूर से स्मरण करे, उस पर तुम्हारी पीड़ा कम हो जाए।"

शनि देव ने प्रसन्न होकर वचन दिया — "जो हनुमान की शरण में जाएगा, उसकी साढ़ेसाती, ढैय्या और वक्र दृष्टि शांत हो जाएगी।" तभी से चली तेल चढ़ाने की परंपरा

तभी से भक्त —

- हनुमान जी को सरसों का तेल चढ़ाते हैं

- सिंदूर और तेल से उनका लेप करते हैं

- उन्हें संकटमोचक मानते हैं

तेल केवल द्रव्य नहीं — यह भक्त की कठोर पीड़ा, जमी हुई बाधा और जले हुए दुःख का प्रतीक है।

कथा का आध्यात्मिक रहस्य हनुमान जी तेल से अभिषिक्त क्यों होते हैं?

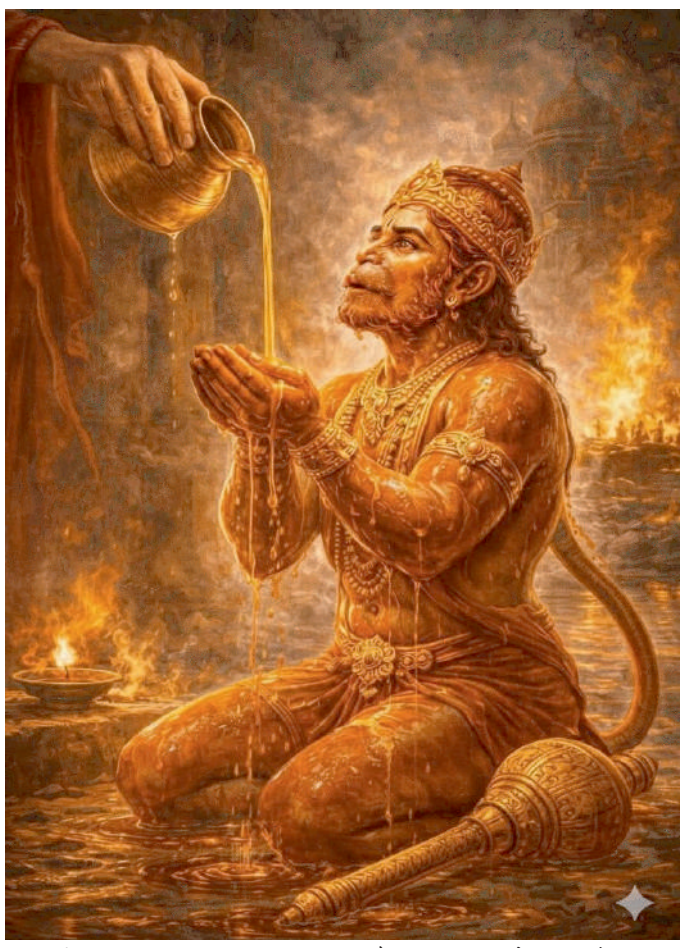

क्योंकि —

- वे उग्र ऊर्जा के देवता हैं

- तेल उनकी उष्णता को संयम देता है

- और भक्त की पीड़ा को शांत करता है

तेल चढ़ाना वास्तव में यह प्रार्थना है — "हे महावीर! मेरे जीवन की रगड़, संघर्ष और तप — सब तुम्हें समर्पित है।"

निष्कर्ष जहाँ शनि का भय समाप्त होता है, वहाँ हनुमान जी का तेलाभिषेक प्रारंभ होता है और इसलिए कहा गया — "तेल से नहीं, विश्वास से प्रसन्न होते हैं बजरंगबली।"

.....“भगवान कहाँ रहते हैं”.....

पिंकी कुंडू

एक ब्राह्मण था, वह घरों पर जाकर पूजा पाठ कर अपना जीवन यापन किया करता था। एक बार उस ब्राह्मण को नगर के राजा के महल से पूजा के लिये बुलावा आया। वह ब्राह्मण राजमहल का बुलावा पाकर खुशी-खुशी पूजा करने गया। पूजा सम्पन्न कराकर जब ब्राह्मण घर को आने लगा, तब राजा ने ब्राह्मण से एक सवाल किया–'हे ब्राह्मण देव ! आप भगवान की पूजा करते हैं तो यह बताये की भगवान कहाँ रहते हैं ? उनकी नजर किस ओर है, और भगवान क्या कर सकते हैं ?'

राजा के प्रश्न सुन ब्राह्मण अचंभित हो गया और कुछ समय विचार करने के बाद राजा से कहा–'हे राजन ! इस सवाल के जवाब के लिए मुझे समय दीजिए।'

राजा ने ब्राह्मण को एक माह का समय दिया। ब्राह्मण प्रतिदिन इसी सोच में उलझा रहता कि इसका जवाब क्या होगा। ऐसा करते-करते समय बीतता गया और कुछ ही दिन शेष रह गये। समय बीतने के साथ ब्राह्मण की चिन्ता भी बढ़ने लगी और जवाब नही मिलने के कारण ब्राह्मण उदास रहने लगा।

एक दिन ब्राह्मण को चिन्तित देख ब्राह्मण के पुत्र ने कहा–'पिता जी आप इतने उदास क्यों हैं।'

ब्राह्मण ने कहा–'बेटा ! कुछ दिनों पहले में पूजा कराने राजमहल गया हुआ था, पूजा सम्पन्न कराकर जब मैं वापस आ रहा था तब राजा ने मुझसे एक सवाल पूछा था।

राजा ने कहा था कि 'भगवान कहाँ रहते हैं ? भगवान क्या कर सकते हैं और भगवान की नजर किस ओर है।' राजा के सवाल का जवाब मुझे उस समय नही सुझा तो मैने उनसे कुछ समय मांगा था, जिसके जवाब के लिये राजा ने मुझे एक माह की समय दिया था और वह एक माह बीतने वाला है लेकिन इसका जवाब मेरे पास नही है, इसलिए मैं चिन्तित हूँ।'

ब्राह्मण की बात सुनकर उनका पुत्र बोला–'पिताजी ! इसका जवाब मैं राजा को दूँगा। आप मुझे साथ ले चलिये।'

एक माह पूरा हुआ तब ब्राह्मण अपने पुत्र को लेकर राजमहल गया और राजा से कहा–'हे राजन ! आपके सवाल का जवाब मेरा पुत्र देगा।'

राजा ने ब्राह्मण के पुत्र से वही सवाल पूछा–'बताओ भगवान कहाँ रहते हैं, भगवान की नजर किस ओर है तथा भगवान क्या कर सकते हैं ?'

उस ब्राह्मण पुत्र ने राजा से कहा–'हे राजन ! क्या आपके राज्य मे पहले अतिथि का आदर सम्मान नही किया जाता।' यह सुन राजा को थोड़ा लज्जित महसूस हुआ। पहले उस बालक को आदर सत्कार के साथ स्थान दिया गया फिर पीने हेतु सेवक दूध का गिलास लाया गया। वह बालक दूध के गिलास पकड़कर दूध में अंगुली डालकर घुमाकर बार-बार दूध को बाहर निकालकर देखने लगा। यह देख राजा ने पूछा–'ये क्या कर रहे हो ?'

बालक ने कहा–'सुना है दूध में मक्खन होता है। मैं वही देख रहा हूँ कि दूध में मक्खन कहाँ है ? आपके राज्य के दूध से तो मक्खन ही गायब है।'

राजा ने कहा–'दूध में मक्खन होता है, परन्तु वह ऐसे दिखाई नहीं देता। जब दूध को जमाकर दही बनाया जाता है, और फिर दही को मथा जाता हैं तब जाकर मक्खन प्राप्त होता है।'

ब्राह्मण के पुत्र ने कहा–'महाराज ! यह आपके पहले सवाल का जवाब है। जिस तरह दूध से दही और फिर दही को मथने से मक्खन प्राप्त होता है, उसी प्रकार परमात्मा प्रत्येक जीव के अन्दर विद्यमान होते है। परन्तु उन्हें पाने के लिये सच्ची भक्ति की आवश्यकता होती है। मन से ध्यानपूर्वक भक्ति करने पर आत्मा में छुपे हुए परमात्मा का आभास होता है।'

राजा ब्राह्मण के पुत्र के जवाब से खुश हुआ और कहा–'अब मेरे दूसरे सवाल का जवाब दो, भगवान किस ओर देखते हैं ?'

उस बालक ने कहा–'राजन ! इसका जवाब मैं दूँगा परन्तु मुझे इसके लिये एक मोमबत्ती की आवश्यकता है।' राजा ने तुरन्त मोमबत्ती मंगाई और उस बालक को दिया।

उस बालक ने मोमबत्ती को जलाकर कहा–'राजन ! आप बताये, इस मोमबत्ती की रोशनी किस ओर है ?'

राजा ने कहा–'इसकी रोशनी चारों दिशा में एक समान है।'

तब उस बालक ने कहा–'हे राजन ! यही आपके दूसरे सवाल का जवाब है। क्योंकि परमात्मा सर्वदृष्टा हैं और उनकी नजर सभी प्राणियों के कर्मों की ओर परस्पर रहती है।'

राजा उस बालक को जवाब से अत्यधिक प्रसन्न हो गये। अब तो वे अन्तिम प्रश्न के उत्तर पाने के लिये और भी उत्सुक हो उठे।

राजा ने कहा–'मेरे अन्तिम सवाल का जवाब दो कि भगवान क्या कर सकते हैं ?'

बालक ने कहा–'हे राजन ! मैं इस सवाल का उत्तर अवश्य दूँगा परन्तु इसके लिये मुझे आपकी जगह पर और आपको मेरी जगह पर आना होगा।'

राजा को तो उत्तर जाने की उत्सुकता थी वो अपनी सहमति दे दिये। वह बालक राजा के सिंहासन पर जा बैठा और कहा–'राजन ! आपके अन्तिम सवाल का जवाब यह है, आपने कहा था कि भगवान क्या कर सकते हैं तो भगवान यह कर सकते कि मुझ जैसे रंक को राज सिंहासन पर बैठा सकते हैं और आप जैसे राजा को मुझ जैसे सवाली के स्थान पर, अर्थात राजा को रंक और रंक को राजा बना सकते हैं यह आपके अन्तिम सवाल का जवाब है।'

राजा उस ब्राह्मण पुत्र के जवाब से अत्यधिक प्रसन्न हुए और उसे अपना सलाहकार बना लिया। भगवान हर एक जीव के हृदय में निवास करते हैं। परमात्मा के साथ प्रेम करेंगे तो वह आपको सही मार्ग दिखायेगे। इसलिए हर जीव को पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन करना चाहिए। जिससे आप अपने अन्दर की उस शक्ति से जुड़ सकें जो आपके भीतर ही मौजूद है लेकिन आप उसे पहचान नहीं पा रहे।

आयुर्वेद ज्ञानामृत

हमारे वेदों के अनुसार प्राकृतिक उपायों से निरोगी एवं स्वस्थ रहने के 15 नियम...

1- खाना खाने के 1.30 घंटे बाद पानी पीना है।

2- पानी घूँट घूँट करके पीना है जिस से अपनी मुँह की लार पानी के साथ मिलकर पेट में जा सके, पेट में एसिड बनता है और मुँह में क्षार, दोनो पेट में बराबर मिल जाए तो कोई रोग पास नहीं आएगा।

3- पानी कभी भी ठंडा (फ्रीज़ का) नहीं पीना है।

4- सुबह उठते ही बिना कुल्ला किए तीन ग्लास पानी पीना है, रात भर जो अपने मुँह में लार है वो अमूल्य है उसको पेट में ही जाना ही चाहिए।

5- खाना, जितने आपके मुँह में दाँत है उतनी बार ही चबाना है।

6- खाना ज़मीन में पलोथी मुद्रा या उखड़ूँ बैठकर ही भोजन करना चाहिये।

7- खाने के मेन्यू में एक दूसरे के विरोधी भोजन एक साथ ना करे जैसे दूध के साथ दही, प्याज़ के साथ दूध, दही के साथ उड़द दल।

8- समुद्री नमक की जगह सेंधा नमक या काला नमक खाना चाहिए।

9- रिफाइंड तेल और डालडा ज़हर है इसकी जगह अपने इलाक़े के अनुसार सरसों, तिल, मूँगफली, नारियल का तेल उपयोग में लाए। सोयाबीन के कोई भी प्रोडक्ट खाने में ना ले इसके प्रोडक्ट को केवल सुअर पचा सकते है, आदमी में इसके पचाने के एंज़िम नहीं बनते है।

10- दोपहर के भोजन के बाद कम से कम 30 मिनट आराम करना चाहिए और शाम के भोजन बाद 500 क़दम पैदल चलना चाहिए।

11- घर में चीनी (शुगर) का उपयोग नहीं होना चाहिए क्योंकि चीनी को सफ़ेद करने में 17 तरह के ज़हर (केमिकल) मिलाने पड़ते है इसकी जगह गुड़ का उपयोग करना चाहिए और आजकल गुड बनाने में कॉस्टिक सोडा (ज़हर) मिलाकर गुड़ को सफ़ेद किया जाता है इसलिए सफ़ेद गुड़ ना खाए। प्राकृतिक गुड़ ही खाये। और प्राकृतिक गुड़ चोकलेट कलर का होता है।

12- सोते समय आपका सिर पूर्व या दक्षिण की तरफ़ होना चाहिए।

13- घर में कोई भी अलूमिनियम के बर्तन, कुकर नहीं होना चाहिए। हमारे बर्तन मिट्टी, पीतल लोहा, काँसा के होने चाहिए।

14- दोपहर का भोजन 11 बजे तक व शाम का भोजन सूर्यास्त तक हो जाना चाहिए।

15- सुबह भोर के समय तक आपको देशी गाय के दूध से बनी छाछ (सेंधा नमक और ज़ीरा बिना भुना हुआ मिलाकर) पीना चाहिए।

यदि आपने ये नियम अपने जीवन में लागू कर लिए तो आपको डॉक्टर के पास जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी

यदि आप बीमार है तो इन नियमों का पालन करने से आपके शरीर के सभी रोग (बीपी, शुगर) अगले 3 माह से लेकर 12 माह में ख़त्म हो सकती है।

जब ग्रह नाराज हो जाएं तो उन्हें कैसे मनाए

पिंकी कुंडू

मनुष्य का पूरा जीवन 9 ग्रहों और 27 नक्षत्रों की चाल और दृष्टि पर टिका हुआ है। सामान्य भाषा में कहें तो जब ग्रहों की कृपा हो तो लोग बलवान और ग्रह नाराज हो जाएं तो भिखारी बन जाते हैं। हम यहां बता रहे हैं कि जब ग्रह नाराज हो जाएं तो उन्हें कैसे मनाएं।

1. शनिः- शनि के लिए दशरथ कृत शनि स्तोत्र में लिखा है जो व्यक्ति पीपल वृक्ष के नीचे बैठ कर शनि देवता के दस नामों को पढ़ेगा उसे शनि की पीड़ा कभी नहीं होगी। शनिवार के दिन सरसों के तेल को अपने ऊपर से उतार कर शनि मंदिर में रख के आ जाना चहिये। चढाना नहीं है सिर्फ रख के आ जाना है, शनिवार को काले वस्त्र आदि का दान करना चहिये, शनि को मजबूत करने के लिए नीलम पहन लेना चहिये (कुंडली विश्लेषण करवाने के उपरांत), हनुमान चालीसा का नित्य दो बार पाठ करना भी अति लाभप्रद होता है, ऐसा कहा गया है की शनि देवता हनुमान जी के भक्तों को कभी परेशान नहीं करते हैं।

2. राहूः- राहू के लिए सबसे अच्छा उपाय मां दुर्गा की साधना है उस से उत्तम कुछ भी नहीं है, दुर्गा सप्तशती को विधि विधान पूर्वक घर में नित्य पाठ करना सभी कष्टों से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर देता है। चींटी की बाम्बी में शक्कर डालना भी राहू की शांति का उपाय है और मछलियों को आटे की गोलियां डालना भी। किसी अपाहिज कोढ़ी बदसूरत व्यक्ति को यथेष्ट जेब में से जो निकल आये वो दे देना चहिये और उसके बारे में सोचना भी नहीं चहिये। किसी भी दान को कर के उसके बारे में वैसे भी नहीं सोचना चहिये !

3. मंगलः- मंगल के लिए हनुमान उपासना से बढ़ कर कुछ भी नहीं है। मूंगा मंगल का रत्न है और उसे मजबूत करने के लिए मूंगा धारण करना चहिये। हनुमान चालीसा में भी मूंगे का उल्लेख आता है। मंगल वार के दिन उपवास करना भी एक उपाय है और शराब मांस से परहेज करना भी। मंगल स्तोत्र का पाठ भी लाभ दायक होता है।

4. केतुः- केतु को बहुत ही शुभ और मोक्ष कारक छाया गृह माना गया है साथ ही बहुत ही अशुभ भी। इसका रत्न लहसुनिया होता है जो कई प्रकार के होते हैं और बहुत सस्ते पत्थर होते है। केतु कुडली में गडबड है तो ये ऐसी बीमारी देता है जिसे सामान्यतः जल्दी पकड़ नहीं पाता। व्यक्ति पर झूठे आरोप लग जाते है। केतु की शांति के लिए कहा जाता है की कुत्ते को रोटी खिलानी चहिये हमारे हिसाब से केतु और राहू की सामान्य रूप से मां दुर्गा की आराधना ही सर्वश्रेष्ट उपाय है और केतु के लिये गणेश जी की पूजा के अलावा शास्त्रोक्त दान आदि करना चहिये।

5. चंद्रमाः- चंद्रमा इनके लिए चांदी धारण करनी चहिये और मोती या स्फटिक की माला पहन लेनी चहिये। ये क्योंकि बहुत शुभ और स्त्री ग्रह है अतः बहुत अनिष्ट आम रूप से नहीं करता। प्राणायाम, ध्यान, अनुलोम विलोम, कपाल पाती इसके लिए सबसे अच्छे उपाय हैं।

6. शुक्रः- शुक्र स्त्री ग्रह है, मनुष्य की कामुकता से इसका सीधा सम्बन्ध भी है, और हर प्रकार के सौंदर्य और ऐश्वर्य से ये सीधे सम्बन्ध रखता है .शुक्र के लिए ओपल, हीरा, स्फटिक का प्रयोग करना चहिये और यदि ये बहुत ही खराब है तो पुरुषों को अश्विनी मुद्रा या क्रिया रोज करनी चाहिये। शुक्र को अच्छा करने के लिए दुर्गा नाम व चालीसा रोज करनी चाहिये

7. सूर्यः- सूर्य राजा है, प्रबल है, तेजस्वी है, प्राण है, गर्मी है ये कुंडली में अच्छा नहीं है तो मनुष्य बहुत भटकता है और मान सम्मान से दूर ही रहता है। इसका रत्न माणिक्य है। आदित्य हृदय स्तोत्र का नित्य पाठ पूर्ण श्रद्धा के साथ करना चहिये। साथ ही सूर्य को ताम्बे के पात्र में गुड और पुष्प समाहित करके अर्ध्य देना चहिये।

8. बुधः- बुध नपुंसक ग्रह है। बुद्धि की तीक्ष्ता, व्यापारिक बुद्धि, लेखा- जोखा, मीडिया, से इसका सीधा सम्बन्ध होता है। इसका रत्न पन्ना है। ये चर्म रोग भी देने में बहुत सक्षम होता है। विष्णु सहस्त्रनाम एवं नारायण कवच का रोज पाठ नियम से करना चहिये अवश्य ही लाभ होता है।

दुर्गा के 32 नाम — जब प्रेत बाधा स्वतः समाप्त हो जाए

पिंकी कुंडू

यह घटना दिखावे की नहीं, अनुभव की है। एक व्यक्ति लंबे समय से अजीब परेशानी से गुजर रहा था। बिना कारण डर लगना, रात में घबराहट, नींद टूट जाना, मन में भारीपन, पूजा में मन न लगना — डॉक्टर, दवा, सब कुछ किया गया, लेकिन बात बन नहीं रही थी।

किसी जानकार ने उसे माँ दुर्गा के 32 नाम का नियमित स्मरण करने को कहा। कोई तंत्र, कोई दिखावा नहीं — सिर्फ नाम - स्मरण।

उसने क्या किया सुबह स्नान के बाद और रात को सोने से पहले, शांत होकर

माँ दुर्गा के 32 नाम पूरे मन से पढ़ने शुरू किए। ना किसी से बहस, ना किसी को दोष — बस नाम और अपना ध्यान।

पहले 3–4 दिन कुछ खास नहीं लगा, लेकिन 7वें दिन से नींद थोड़ी गहरी होने लगी। 10–12 दिन में रात की घबराहट कम हो गई। 21वें दिन उसने खुद महसूस किया कि जिस "डर" के साथ वो जी रहा था, वो अब उसके ऊपर हावी नहीं है।

असल में क्या हुआ दुर्गा के 32 नाम केवल शब्द नहीं हैं। हर नाम एक शक्ति - स्थिति है —

* कोई नाम रक्षा करता है,

* कोई नाम भय को तोड़ता है,

* कोई नाम नकारात्मक चेतना को टिकने नहीं देता।

प्रेत बाधा का मतलब हमेशा कुछ दिखाई देने वाला नहीं होता। कई बार यह

* बिना कारण का डर

* मन पर भारीपन

* पूजा से दूरी

* रात की बेचैनी

* अचानक नकारात्मक विचार

के रूप में प्रकट होती है।

जब नाम - स्मरण नियमित होता है, तो व्यक्ति का आभामंडल (Aura) मजबूत होने लगता है। जहाँ चेतना स्थिर हो जाती है, वहाँ नकारात्मक ऊर्जा टिक नहीं पाती।

32 नाम क्यों असरदार हैं क्योंकि यह स्मरण

* मन को एकाग्र करता है

* भय की जड़ को काटता है

* साधक को "सहारा" देता है

* और भीतर से यह भाव जगाता है — मैं अकेला नहीं हूँ

इस साधना में कोई डर नहीं, कोई जोखिम नहीं, कोई जटिल नियम नहीं। सिर्फ एक बात ज़रूरी है — नियमितता।

अगर कोई व्यक्ति रात में डरता है, बेचैन रहता है या उसे लगता है कि कोई अदृश्य दबाव है — तो दुर्गा के 32 नाम का स्मरण

एक सुरक्षित और प्रभावी उपाय है।

लोक हितैषी योजनाओं का लाभ हर पात्र तक पहुंचाना सुनिश्चित करें विभाग :डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

विकास समन्वय निगरानी समिति की बैठक में डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों को दिए निर्देश

झज्जर, 11 फरवरी। प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने वीसी के माध्यम से राज्य स्तरीय विकास समन्वय निगरानी समिति की बैठक की। जिला से संबंधित विषयों की प्रगति की रिपोर्ट उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने रखी। जिसमें केंद्र व राज्य सरकार की विभिन्न जन कल्याणकारी एवं विकासात्मक योजनाओं की प्रगति की विस्तार से समीक्षा की गई।

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग उपरांत डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों के साथ बैठक में एजेंडा के अनुसार समीक्षा करते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सरकार की प्राथमिकता है कि प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ बिना किसी देरी के पहुंचे, इसलिए सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करें और प्रगति की नियमित समीक्षा सुनिश्चित करें।

उपायुक्त ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि विकास परियोजनाओं में गुणवत्ता से किसी प्रकार का समझौता न किया जाए तथा निर्धारित समयसीमा के भीतर कार्यों को पूरा किया जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि जिन योजनाओं की प्रगति अपेक्षाकृत धीमी है, उनमें तेजी लाई जाए और जमीनी स्तर पर आ रही बाधाओं का त्वरित समाधान किया जाए।

डीसी ने कहा कि जनहित से जुड़ी योजनाओं की सतत निगरानी अत्यंत आवश्यक है। अधिकारी फील्ड विजिट बढ़ाएं, कार्यों का भौतिक सत्यापन करें तथा यह सुनिश्चित करें कि सरकारी संसाधनों का उपयोग पारदर्शी और प्रभावी तरीके से हो। उन्होंने निर्देश दिए कि प्रत्येक विभाग अपनी उपलब्धियों और प्रगति रिपोर्ट को नियमित रूप से अपडेट रखें। उन्होंने यह भी कहा कि नागरिकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरना प्रशासन की सर्वोच्च जिम्मेदारी है। उपायुक्त पाटिल ने अधिकारियों से आह्वान किया कि वे टीम भावना के साथ कार्य करते हुए विकास कार्यों में गति लाएं, जिससे जिले में समग्र विकास को और मजबूती मिल सके तथा आमजन को सरकार की योजनाओं का अधिकतम लाभ प्राप्त हो।

इस अवसर पर सीईओ जिला परिषद मनीष फोगाट, जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी निशा तंवर, कार्यकारी अभियंता अश्विनी सांगवान, सुमित कुमार व अनिल रोहिल्ला डीआईपीआरओ सतीश कुमार, जिला शिक्षा अधिकारी रतिंद्र सिंह सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

जिला व उपमंडल स्तर पर समाधान शिविर आज : डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

सुबह 10 से 12 बजे तक अधिकारी सुनेंगे नागरिकों की शिकायतें

झज्जर, 11 फरवरी। आमजन की समस्याओं के शीघ्र, पारदर्शी एवं प्रभावी निवारण के उद्देश्य से वीरवार, 12 फरवरी को जिला मुख्यालय सहित सभी उपमंडलों में समाधान शिविरों का आयोजन किया जाएगा। समाधान शिविर प्रातः: 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक संचालित होंगे, ताकि नागरिकों को उनकी शिकायतों के समाधान के लिए एक सुलभ एवं प्रभावी मंच उपलब्ध हो सके।

जिला स्तरीय समाधान शिविर लघु सचिवालय, झज्जर स्थित प्रथम तल पर कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित होगा, जिसकी अध्यक्षता उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल करेंगे। शिविर के दौरान उपायुक्त विभिन्न विभागों से संबंधित शिकायतें सुनेंगे । उपमंडल स्तर पर भी संबंधित लघु सचिवालय परिसरों में समाधान शिविर आयोजित किए जाएंगे। बहादुरगढ़ में एसडीएम अभिनव सिवाच, बेरी में एसडीएम रेणुका नांदल तथा बादली में एसडीएम डॉ. रमन गुप्ता की अध्यक्षता में शिविर लगाए जाएंगे। इन शिविरों में नागरिकों की शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर निपटान सुनिश्चित किया जाएगा, जिससे लोगों को अनावश्यक कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें।

उपायुक्त ने बताया कि समाधान

शिविर प्रशासन और नागरिकों के बीच सीधे संवाद का सशक्त माध्यम हैं। शिविरों में विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहते हैं, जिससे आमजन को एक ही स्थान पर बहुविभागीय सेवाएं और समस्याओं का त्वरित समाधान मिल सके। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि वे इन शिविरों का अधिकाधिक लाभ उठाएं ।

38वें नेशनल गेम्स के पदक विजेता व प्रतिभागी खिलाड़ी 14 फरवरी तक करें नकद पुरस्कार हेतु आवेदन

झज्जर, 11 फरवरी। जिला खेल अधिकारी सतेन्द्र कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि 38वें नेशनल गेम्स 2025, उत्तराखंड में जिला का प्रतिनिधित्व करने वाले पदक विजेता व प्रतिभागी खिलाड़ी नकद पुरस्कार प्राप्त करने के लिए खेल विभाग की वेबसाइट हरियाणा खेल कैशअवार्ड डॉट इन पर 14 फरवरी 2026 तक अपना ऑनलाइन आवेदन अवश्य करें। उन्होंने बताया कि यह नकद पुरस्कार योजना खिलाडियों को प्रोत्साहित करने तथा उनकी उपलब्धियों का सम्मान करने के उद्देश्य से संचालित की जा रही है। पात्र खिलाड़ी निर्धारित तिथि से पूर्व आवेदन सुनिश्चित करें, ताकि उन्हें समय पर योजना का लाभ मिल सके।

जिला खेल अधिकारी ने स्पष्ट किया कि जिन खिलाडियों ने पूर्व में 38वें नेशनल गेम्स 2025, उत्तराखण्ड के लिए ऑनलाइन आवेदन किया जा चुका है, उन्हें दोबारा आवेदन करने की आवश्यकता नहीं है। आवेदन करने में कोई परेशानी होने पर जिला खेल विभाग महर्षि दयानंद स्टेडियम झज्जर से संपर्क कर सकते हैं।

प्रशासन का रायपुर गांव में 20 फरवरी को रात्रि ठहराव कार्यक्रम : सीटीएम

विभागीय स्टॉल और स्वास्थ्य जांच शिविर के माध्यम से मिलेगी योजनाओं की जानकारी

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 20 फरवरी। प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी की पहल पर जिला प्रशासन द्वारा प्रत्येक माह आयोजित किए जाने वाले रात्रि ठहराव कार्यक्रम का आयोजन 20 फरवरी को खंड माछरौली के गांव रायपुर स्थित राजकीय प्राथमिक पाठशाला परिसर में किया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल करेंगे।

उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ग्रामीणों से सीधा संवाद कर उनकी समस्याएं सुनेंगे तथा संबंधित विभागों के अधिकारियों को मौके पर ही समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश देंगे। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रशासन को गांव स्तर तक पहुंचाकर आमजन की समस्याओं का त्वरित एवं प्रभावी निवारण करना है।

सीटीएम नमिता कुमारी ने जानकारी देते हुए बताया कि कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विभागों द्वारा जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देने के लिए स्टॉल लगाए जाएंगे, जिससे ग्रामीणों को योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में आसानी होगी। इसके साथ ही स्वास्थ्य विभाग द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा, जहां नागरिकों की जांच कर आवश्यक परामर्श प्रदान किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि रात्रि ठहराव कार्यक्रम प्रशासन की एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसके माध्यम से अधिकारियों को गांव की जमीनी स्थिति का प्रत्यक्ष आकलन करने और विकास कार्यों की प्रगति की समीक्षा करने का अवसर मिलता है। इससे शासन और जनता के बीच संवाद और अधिक सुदृढ़ होता है।

जिला प्रशासन ने ग्रामीणों से अपील की है कि वे इस अवसर का अधिकतम लाभ उठाएं और अपनी समस्याएं, सुझाव व मांगे प्रशासन के समक्ष रखें, ताकि गांव के सर्वांगीण विकास को और गति मिल सके।

यूनानी दिवस पर झज्जर में निःशुल्क आयुष चिकित्सा शिविर आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

विशेषज्ञ चिकित्सकों ने रोगियों की जांच कर दी स्वास्थ्य संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी

झज्जर, 11 फरवरी।

जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ. संगीता ने बताया कि यूनानी दिवस के उपलक्ष्य में राधा कृष्ण वकील राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय, झज्जर में निःशुल्क आयुष चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्देश्य आमजन को पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के प्रति जागरूक करना तथा उन्हें बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना रहा।

चिकित्सा शिविर में डॉ. असलम अली ने यूनानी चिकित्सा पद्धति के माध्यम से रोगियों का निदान कर उचित उपचार प्रदान किया। वहीं आयुर्वेदिक चिकित्सा अधिकारी डॉ. पवन कुमार ने आयुर्वेद पद्धति से रोगियों की जांच करते हुए उन्हें ऋतुचर्या के महत्व के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जीवन में संतुलित एवं उचित आहार हमें आरोग्यता प्रदान करता है, जबकि अनुचित आहार कई रोगों का कारण बन सकता है। शिविर के दौरान आयुष योग सहायकों ने उपस्थित लोगों को योग के लाभों से अवगत कराया और सूर्य नमस्कार सहित रोगानुसार योगाभ्यास भी करवाया। इस अवसर पर आयुर्वेदिक फार्मासिस्ट बिजेंद्र, गौतम, विजेंद्र तथा लतेश उपस्थित रहे और शिविर के सफल आयोजन में अपना योगदान दिया।

मेडिएशन फॉर नेशन 2.0 से मिलेगा त्वरित न्याय, 90 दिवसीय राष्ट्रव्यापी अभियान जारी

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 11 फरवरी। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, झज्जर के तत्वावधान में जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं अध्यक्ष डीएलएसए राजकुमार यादव के नेतृत्व तथा मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी एवं सचिव डीएलएसए विशाल के मार्गदर्शन में मेडिएशन फॉर नेशन 2.0 अभियान संचालित किया जा रहा है।

सीजेएम एवं सचिव विशाल ने जानकारी देते हुए बताया कि राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (नालसा) द्वारा यह 90 दिवसीय राष्ट्रव्यापी विशेष अभियान 2 जनवरी से प्रारंभ होकर अप्रैल माह तक चलाया जाएगा। अभियान का मुख्य उद्देश्य न्यायालयों में लंबित मामलों के बोझ को कम करना तथा आमजन को समय, धन और मानसिक तनाव से राहत प्रदान करना है।

उन्होंने बताया कि इस अभियान के तहत वैवाहिक विवाद, मोटर दुर्घटना दावे, संपत्ति बंटवारा, चेक

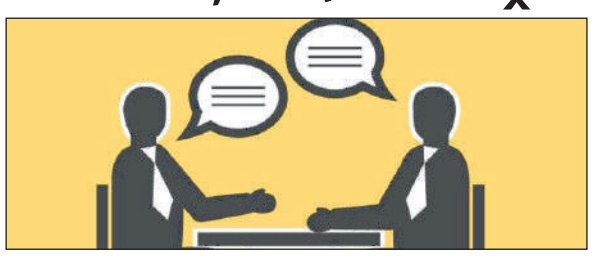

बाउंस (धारा 138) तथा उपभोक्ता विवाद जैसे समझौता योग्य मामलों का त्वरित और सौहार्दपूर्ण निपटारा किया जाएगा। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा चिन्हित मामलों को प्रशिक्षित मध्यस्थों के माध्यम से सुलझाया जाएगा, जिससे पक्षकारों को सरल और प्रभावी न्याय मिल सके।

सीजेएम ने कहा कि मध्यस्थता प्रक्रिया में कोई पक्ष हारता या जीतता नहीं है, बल्कि दोनों पक्ष आपसी सहमति से समाधान तक पहुंचते हैं। यह प्रक्रिया पूर्णतः निःशुल्क है तथा इसमें कोर्ट फीस वापसी का भी प्रावधान है।

उन्होंने नागरिकों से आहवान करते हुए कहा कि अधिक से अधिक इस अभियान का लाभ उठाएं और आपसी सहमति के माध्यम से अपने विवादों का समाधान कर न्यायिक प्रक्रिया को सशक्त बनाने में सहयोग दें।

पीएम किसान सम्मान निधि के लिए फार्मर आईडी जरूरी:डीसी

जिला में अभी तक साढ़े 53 हजार से अधिक किसानों ने बनवाई फार्मर आईडी

डिजिटल एग्री स्टैक अभियान में तेजी लाने के निर्देश, शत-प्रतिशत लक्ष्य तय

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 11 फरवरी। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने डिजिटल एग्री स्टैक फार्मर आईडी अभियान की प्रगति की समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को कार्य में और अधिक तेजी लाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि भविष्य में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना सहित सभी कृषि योजनाओं का लाभ फार्मर आईडी के माध्यम से ही सुनिश्चित किया जाएगा, इसलिए इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ पूरा किया जाए।

डीसी ने बताया कि जिला प्रशासन द्वारा एग्री स्टैक अभियान को मिशन मोड में चलाया जा रहा है और सभी विभागों को आपसी समन्वय के साथ काम करने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस महत्वपूर्ण कार्य में किसी भी स्तर पर लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी और निर्धारित समय-सीमा के भीतर शत-प्रतिशत लक्ष्य हासिल करना अनिवार्य है।

उपायुक्त ने कहा कि प्रत्येक किसान की फार्मर आईडी बनना बेहद जरूरी है, क्योंकि यही आईडी भविष्य में मिलने वाली सब्सिडी, सरकारी योजनाओं, अनुदानों और अन्य

सेवाओं का आधार बनेगी। बिना आईडी के किसान लाभ से वंचित रह सकते हैं, इसलिए अधिकारी सुनिश्चित करें कि कोई भी पात्र किसान छूटने न पाए।

उपायुक्त ने जानकारी देते हुए बताया कि जिले में अब तक कुल 53 हजार 679 किसानों की डिजिटल एग्री स्टैक फार्मर आईडी बनाई जा चुकी है। उन्होंने शेष किसानों से अपील की अपनी फार्मर आर्डडी जल्द से जल्द बनवाएं। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना केंद्र सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना है, जिसके तहत पात्र किसानों को प्रतिवर्ष 6 हजार रुपये की आर्थिक सहायता तीन समान किस्तों में सीधे उनके बैंक खातों में प्रदान की जाती है। यह राशि किसानों को कृषि संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने और आर्थिक मजबूती प्रदान करने में सहायक सिद्ध हो रही है। डीसी ने कहा कि योजना का निर्बाध लाभ प्राप्त करने के लिए किसानों का फार्मर आईडी बनवाना अत्यंत आवश्यक है।

डीसी पाटिल ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि गांव-गांव जाकर विशेष कैंप आयोजित किए जाएं, किसानों को फार्मर आईडी के महत्व के बारे में जागरूक किया जाए और मौके पर ही आईडी जनरेट की जाए। उन्होंने यह भी कहा कि तकनीकी या दस्तावेज संबंधी समस्याओं का तुरंत समाधान किया जाए, ताकि अभियान की गति प्रभावित न हो और अधिक से अधिक किसानों को समय पर योजनाओं का लाभ मिल सके।

दिव्यांगजनों व वरिष्ठ नागरिकों के लिए सहायक उपकरण जांच-मापतौल शिविर 13 से 14 फरवरी तक

झज्जर, 11 फरवरी। डीसी एवं प्रधान, जिला रेडक्रॉस सोसायटी, झज्जर स्वप्निल रविन्द्र पाटिल के कुशल मार्गदर्शन में अरावली पावर कंपनी लिमिटेड, झज्जर तथा भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम, नई दिल्ली के सहयोग से जिला प्रशासन द्वारा दिव्यांगजनों एवं वरिष्ठ नागरिकों के लिए सहायक उपकरण एवं कृत्रिम अंगों की जांच-मापतौल हेतु विशेष शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह शिविर 13 फरवरी से 14 फरवरी 2026 तक जिला रेडक्रॉस भवन झज्जर में आयोजित होगा। इस शिविर का उद्देश्य पात्र दिव्यांगजनों और वरिष्ठ नागरिकों को कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (सीएसआर) योजना के तहत निःशुल्क सहायक उपकरण उपलब्ध कराना है, ताकि वे दैनिक जीवन में अधिक आत्मनिर्भर बन सकें और उनकी जीवन गुणवत्ता में सुधार हो। शिविर में दिव्यांगजनों को निःशुल्क सहायक उपकरण प्राप्त करने के लिए यूडीआईडी कार्ड, आधार कार्ड तथा आय प्रमाण पत्र (मासिक आय 22 हजार पांच सौ रुपये या उससे कम) प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा। वहीं वरिष्ठ नागरिकों के लिए आधार कार्ड आयु 60 वर्ष या उससे अधिक तथा आय प्रमाण पत्र होना आवश्यक है।

करोड़पति की कार से एक्सीडेंट मामले में रिपोर्ट कर्ता ने किया समझौता, बेटे की जगह चालक पेश

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां के बहुचर्चित करोड़पति तम्बाकू व्यवसाई के के मिश्रा के बेटे शिवम द्वारा किए गये लेम्बोर्गिनी कार से चार लोगों को टक्कर मारने के मामले में एकदम से नया मोड़ आ गया है। ऐसा मुकदमा जारी करने वाले वादी द्वारा समझौता कर लेने और बेटे शिवम की जगह चालक मोहन द्वारा कार चलाने की बात कहने और इस आधार पर कोर्ट में अर्जी डालने की वजह से हुआ है।

मिली जानकारी के मुताबिक पहले कथित ड्राइवर ने दोपहर में कोर्ट में सरेंडर कर दिया। फिर मुकदमा दर्ज कराने वाले मो. तौसीफ ने समझौता कर लिया।

यह बात अलग है कि कोर्ट ने

आरोपी नहीं मानते हुए ड्राइवर मोहन की अर्जी खारिज कर दी। कोर्ट ने कहा कि पुलिस रिपोर्ट में आरोपी शिवम है, मोहन का कहीं नाम नहीं है। इसलिए उसकी जमानत याचिका मंजूर नहीं की गई। कार अभी थाने में ही रहेगी।

इसी मामले में इससे पहले ड्राइवर मोहन वकील नरेंद्र कुमार यादव के साथ कोर्ट पहुंचा। मोहन ने कहा कि शिवम मिश्रा की गाड़ी मैं ही चला रहा था। शिवम को दौरा पड़ गया था। इस बीच उसने आगे जो बयान दिया उसके मुताबिक उसका कहना है कि उस वक्त मैं घबरा गया था। कुछ समझ नहीं आया। उसी वक्त हादसा हो गया। जब शीशा तोड़ा और दरवाजा खोला गया तो मैं नीचे से निकल गया था। बाउंसर ने शिवम को निकाला था। हादसे के बाद मैं कोने में खड़ा हो गया था। शिवम को दूसरी गाड़ी में ले जाया गया था।

फिलहाल पुलिसअपनी जांचके आधार पर ही अग्रिम कार्रवाई पर लगातार जुटी हुई है। पुलिस की जांच के जाड़े मेंकर चालक के रूप में अभी तक शिवम ही आरोपी साबित हुआ है।

स्वस्थ जीवन के लिए खेल जरूरी: अंकित चौकसे

जिला स्तरीय महिला खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन

एसडीएम अंकित कुमार चौकसे ने किया विजेताओं को सम्मानित

झज्जर, 11 फरवरी। महर्षि दयानंद सरस्वती स्टेडियम में महिला एवं बाल विकास विभाग के तत्वावधान में जिला स्तरीय महिला खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में उपमंडल अधिकारी झज्जर अंकित कुमार चौकसे मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि मुख्यमंत्री सुशासन सहयोगी कुमारी खुशी ने विशिष्ट अतिथि के रूप में सहभागिता की। एसडीएम ने खेलों में प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि जीत से ज्यादा जरूरी खेलों में भागीदारी करना है। स्वस्थ जीवन के लिए खेल जरूरी है। नियमित रूप से खेलने से शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हैं।

प्रतियोगिता में जिले की महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए 100 मीटर , 300 मीटर , 400 मीटर रेस, पांच किलोमीटर साइकिल रेस, डिस्कस थ्रो तथा म्यूजिकल चेयर जैसी विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं में अपनी प्रतिभा का

प्रदर्शन किया। मुख्य अतिथि ने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि खेल गतिविधियां महिलाओं के शारीरिक एवं मानसिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

प्रतियोगिता के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। कार्यक्रम के अंत में जिला कार्यक्रम अधिकारी कुमारी सपना ने मुख्य अतिथि एवं उपस्थित अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

विजेताओं की सूची इस प्रकार है:

डाबौदा खुर्द निवासी कविता ने 100 मीटर रेस में ,निशा ने 300 मीटर रेस, गांव सालावास निवासी अनिता ने 400 मीटर रेस में प्रथम स्थान, गांव साल्हावास से डिस्कस थ्रो में मनोज ने प्रथम स्थान व गांव अकेहड़ी मदनपुर से नेहा ने 5 किलोमीटर साइकिल रेस में प्रथम स्थान और बहादुरगढ़ से मीना ने म्यूजिकल चेयर में प्रथम स्थान हासिल किया।

कश्मीरी गेट से पानीपत डीटीसी बस समय विवरण : Kashmiri gate to Panipat DTC bus timing: morning shift 0700 0730 0830 Evening shift 1500 1600 1700 [0: Panipat to Kashmiri gate ISBT DTC bus timing: morning shift 1010 1040 1140 Evening shift 1815 1915 2015 पानीपत से दिल्ली के बीच चलने वाली बसों का समय सारणी

महामहिम राष्ट्रपति महोदया को दिया वृन्दावन रामकृष्ण मिशन में आने का निमंत्रण

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। मथुरा रोड़ स्थित रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम अस्पताल में समर्पित कैंसर ब्लॉक के उद्घाटन के लिए मंगलवार को वृन्दावन रामकृष्ण मठ एवं मिशन के सचिव स्वामी सुप्रकाशानंद महाराज एवं सह सचिव स्वामी कालीकृष्णानंद महाराज ने महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को वृन्दावन आने का निमंत्रण दिया।

निर्धन, असहाय एवं जरुरतमंद रोगी नारायण की सेवा में समर्पित रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम अस्पताल में कैंसर रोगियों के सेवार्थ एक पूर्णतया समर्पित कैंसर ब्लॉक (68000 वर्ग फुट चार मंजिला) जल्द शुरु होने जा रही है। जिसकी विधिवत तथा औपचारिक शुरुआत मार्च महीने के अंतिम सप्ताह तक होने की पूरी संभावना है। मंगलवार को सेवाश्रम के सचिव स्वामी सुप्रकाशानंद महाराज एवं सह सचिव स्वामी कालीकृष्णानंद महाराज ने महामहिम से औपचारिक भेंट कर इस आधुनिक कैंसर विंग के उद्घाटन हेतु वृन्दावन आने का निमंत्रण दिया।

महामहिम से भेंट के बाद उन्होंने बताया कि महामहिम ने सेवा के इस विराट प्रकल्प की सराहना करते हुए कहा कि यह कैंसर प्रकल्प जरूरतमंद एवं असहाय लोगों के लिए बहुत ही उपयोगी साबित होगा।

उन्होंने बताया की जल्द ही उनके कार्यालय से उदघाटन की तारीख की सूचना भेजी जाएगी। महामहिम इस से पहले रामकृष्ण मिशन के रांची एवं जमशेदपुर शाखाओं में उनकी यात्रा के पलों को महाराज लोगों के संग याद किया।

उन्होंने महामहिम को युगपुरुष स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा भेंट करते हुए कहा कि इन्हीं युगपुरुष की प्रेरणापुंज का यह बीज आज 400 बिस्तरों वाले अस्पताल का साकार वटवृक्ष बन चुका है। उन्होंने बताया कि आसपास के क्षेत्रों में यह कैंसर ब्लॉक रोगियों के सेवार्थ और लाभार्थ उत्कृष्ट कार्य करेगी।

अत्याधुनिक मेडिकल संसाधनों से सुसज्जित एवं सुशोभित इस कैंसर ब्लॉक में रेडियोथेरेपी, ब्रकीथेरेपी, कैंसर आधुनिक शल्य चिकित्सा, कीमोथेरेपी, इम्मुनोथेरपी एवं हॉर्मोनथेरपी, आर.टी. सीटी स्कैन, पिईटी सीटी स्कैन, एक जनरल वार्ड, डे केयर, फार्मेसी, प्राइवेट केबिन जैसे कई सुविधाएँ उपलब्ध हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं आस-पास के राज्यों में यह केवल एकमात्र आधुनिकतम सुविधावाली कैंसर चिकित्सा विभाग होगी एवं यहाँ पर हर तरह के कैंसर का पूर्ण इलाज की सुविधा उपलब्ध होगी।

देश और पड़ोसी देशों के पत्रकारों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया

पीजीडीएवी कॉलेज के प्रोफेसर मनोज कुमार कैन को मिला प्रथम "बोधिसत्व अंतर्राष्ट्रीय पत्रकारिता सम्मान – 2026.

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कॉलेज सभागार में संत शेर सिंह रिसर्च एंड एजुकेशन ट्रस्ट रजिस्टर्ड और सार्क जर्नलिस्ट फोरम इंडिया चैप्टर की ओर से ₹बोधिसत्व अंतर्राष्ट्रीय पत्रकारिता सम्मान 2026₹का आयोजन किया गया।इस आयोजन में भारत के अलावा भारत के पड़ोसी देशों के पत्रकारों समाज सेवकों और बुद्धिजीवियों को सम्मानित किया गया ।

इस आयोजन में ट्रस्ट के चैयरमैन प्रो. हंसराज सुमन ने अपनी बात रखते हुए ट्रस्ट की आगामी योजनाओं, उद्देश्यों और महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया की ट्रस्ट भारत के दूसरे पड़ोसी देशों के पत्रकारों को सम्मानित करते हुए गौरवान्वित अनुभव कर रही है। उन्होंने कहा बौद्ध धर्म एक ऐसा धर्म है जो भारत के अलावा भारत से बाहर दूसरे देशों में बहुत ही प्रचारित और प्रसारित हुआ। महात्मा बुद्ध ने पूरे विश्व में शांति का शाश्वत संदेश दिया ।आज बौद्ध धर्म के अनुयायी पूरे विश्व में उपस्थित हैं ।कार्यक्रम के संयोजक प्रो.केपी सिंह ने पत्रकार और पत्रकारिता के गुणों को सभी के समक्ष प्रस्तुत किया ।उन्होंने कहा की पत्रकार को ईमानदारी से अपनी बात रखनी चाहिए। टीवी एंकर पूजा मोहन पांडे ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा की कोई भी समय रहे पत्रकार को उन बातों को जरूर अपने लेखन में लाना चाहिए जो गलत हो रही हो ।पत्रकारिता सदैव चुनौती पूर्ण कार्य रहा है ।कार्यक्रम में इंडिया चैप्टर के अध्यक्ष डॉ. अनिरुद्ध ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि आज पत्रकारिता के विभिन्न आयाम हमारे समक्ष हैं ;हमें उन आयामों को समझ कर लेखन करना चाहिए ।उन्होंने कार्यक्रम में आए सभी मुख्य अतिथियों का पगड़ी और अंग वस्त्र से सुंदर स्वागत भी किया। इस कार्यक्रम में सार्क जर्नलिस्ट फोरम के सदस्य डॉ.ए.के. जयंत भी उपस्थित रहे।

सम्मानित लोगों में दीपेंद्र प्रजापति,शैलेश साहू कनु,अविनाश कुमार गुप्ता,रुद्र सुबुद्धि-नेपाल,राहुल सामंत-श्रीलंका, यूएसपी भंडारा-श्रीलंका,डॉ. एके जयंत-सार्क सदस्य,पूजा मोहन पांडे-न्यूज़ एंकर, अश्वनी कुमार-न्यूज़ एडिटर वीर अर्जुन,बलवान सिंह, सोहन वीर कैन,के. योगेश, प्रदीप कुमार आर्यन,प्रियंका सिंह,हरि प्रजापति,प्रो.मनोज कुमार कैन रहे ।डॉ.लवकुश ने कार्यक्रम का सुंदर संचालन किया ।बड़ी संख्या में लोगों की उपस्थिति रही।

"वन नेशन, वन इलेक्शन" पर दिल्ली में महत्वपूर्ण बैठक, अखिल भारतीय जाटव समाज के राष्ट्रीय महामंत्री एवं पूर्व न्यायधीश अनिल कुमार ने की अध्यक्षता

नई दिल्ली, संजय सिंह। अखिल भारतीय जाटव समाज के राष्ट्रीय महामंत्री एवं पूर्व न्यायाधीश अनिल कुमार ने कल नई दिल्ली में आयोजित "वन नेशन, वन इलेक्शन" जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण और समसामयिक विषय पर आयोजित बैठक की अध्यक्षता की। यह बैठक देश में लोकतांत्रिक सुधारों और प्रशासनिक स्थिरता को लेकर एक गंभीर विमर्श का मंच बनी।

बैठक के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल के समक्ष अनिल कुमार महोदय ने सामाजिक न्याय, सामाजिक समरसता तथा समाज के समग्र उत्थान से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण एवं सार्थक विषयों को अत्यंत प्रभावशाली और तार्किक ढंग से प्रस्तुत किया।

श्री कुमार ने कहा कि लोकतंत्र की मजबूती तभी संभव है, जब नीति निर्माण में समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति की भागीदारी और सशक्तिकरण सुनिश्चित हो। उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि "वन नेशन, वन इलेक्शन" जैसी पहल न केवल संसाधनों की बचत करेगी, बल्कि शासन व्यवस्था को अधिक प्रभावी, पारदर्शी और जनोन्मुखी बनाने में भी सहायक सिद्ध होगी।

यह बैठक लोकतांत्रिक सुधारों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है, जो सामाजिक संतुलन, समान अवसर और समावेशी विकास के

मूल्यों को सशक्त आधार प्रदान करती है। कार्यक्रम में विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों और प्रबुद्धजनों की सक्रिय सहभागिता रही।

स्लाइट संस्थान ने नेक्स्टस्टेप स्किल्स एलएलपी के साथ एम.ओ.यू हस्ताक्षरित किया

लोंगोवाल,11 फरवरी (जगसीर सिंह)- स्लाइट इनोवेशन और इन्क्यूबेशन सेक्शन-8 कंपनी, लोंगोवाल ने नेक्स्टस्टेप स्किल्स एलएलपी, बरनाला के साथ संत लोंगोवाल तकनीकी संस्थान के निर्देशक प्रोफेसर मणिकांत पासवान की अगुवाई में एमओयू हस्ताक्षरित किया, यह साझेदारी कौशल विकास, संयुक्त अनुसंधान, प्रौद्योगिकी विकास और युवा सशक्तिकरण पर केंद्रित है। यह एमओयू पर्यावरण इंजीनियरिंग, मैकेनिकल टेक्नोलॉजी, ग्रीन इनोवेशन जैसे क्षेत्रों में प्रैक्टिकल ट्रेनिंग प्रदान करेगा,युवाओं को प्रमाणपत्र, वर्किंग किट और मासिक स्टाइपेंड मिलेगा, जिससे स्वरोजगार को प्रोत्साहन मिलेगा, इसमें 500 से अधिक युवाओं के प्रशिक्षण का लक्ष्य भी शामिल है, संयुक्त प्रोजेक्ट्स जल उपचार, ड्यूल-फ्यूल इंजन, वाइब्रेशन विश्लेषण, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और साइबर सिक्योरिटी पर फोकस करेंगे। स्लाइट संकाय और नेक्स्टस्टेप विशेषज्ञ मिलकर काम करेंगे, जिसमें इंटर्नशिप और ज्ञान साझाकरण शामिल है, स्लाइट के प्रोटोटाइप्स और ग्रीन टेक्नोलॉजी को नेक्स्टस्टेप के जरिए व्यावसायिक रूप से हस्तांतरित किया जाएगा जिससे स्टार्टअप्स को बढ़ावा मिलेगा और पंजाब उद्योगों में तकनीकी एकीकरण होगा । इस समय स्लाइट के डीन प्रो. चरणजीव गुप्ता , प्रो.डॉ. सुरिता मैनी, प्रोफेसर आजाद शत्रु अरोड़ा, और नेक्स्टस्टेप स्किल्स के अधिकारी मौजूद रहे।

तुम जो चाहते, तो हालात बदल सकते थे,

केके छाबड़ा

गम के बदले आंसू,
खुशी के निकल सकते थे।
पर तुम तो भटकते रहे,
संसार की मोह माया में।
मां के चरणों से लगते,
तो अपना जीवन बदल सकते थे।

सारी उम्र हाय हाय करी,
कुछ ना हुआ करीब,
कोड़ी कोड़ी माया जोड़ी,
पर कफन ना हुआ नसीब,
याद करता अगर हर पल मेरी मां को,
तो हर हाल में बदल जाता तेरा नसीब है।

इकट्ठे कर ले सारे जहां से,
हीरे,जवाहरात और मोती,
पर ए बंदे याद रख,
कफन में जेब नहीं होती।

हर चीज को अपना अपना कहने का दावा करता है इंसान, मगर इस नासमझ इंसान को तो यह भी नहीं मालूम की तेरी तो सांसे भी उधार की है।

सांस आ गई तो जीवन, नहीं आई तो जीवन पूरा हो गया।

* यही सच्चाई है जब तक इंसान जीवन जीता है, तब तक अधूरा रहता है।
* जैसे ही सांस की डोरी टूटी, लोग कहते हैं, इंसान पूरा हो गया।
* फिर घमंड किस बात का

जब तक जीवन है, मां भगवती का सिमरन कर लो यही काम आना है बाकी तो सब यहीं छूट जाना है. आप क्या सोचते हैं, यह आप पर निर्भर करता है.

* जो कपड़ा रंग बदले, उसे शरीर से उतार दो,
* जो इंसान रंग बदले, उसे दिल से उतार दो हमेशा के लिए,
जीवन सुख से बीतेगा.
* ज्यादातर लोग रिश्तो का धंधा करते है, ज़ब तक उनका काम बनता रहता है रिश्ता बना रहता है, जैसे ही काम खत्म रिश्ता खत्म।
* शीशा ज़ब तक जुडा रहता है, तब तक लोग उसमे अपना चेहरा देख कर जाते है लेकिन ज़ब शीशा टूट जाता है तो खतरनाक तलवार बन जाता है।

मधुमास (सरसी छंद गीत

धरती चहकी मनवा झूमे, आया है रसवंत।
फूल खिले नव वन उपवन में, आया देख बसंत।।

पेड़ पात तरुवर भी झूमे, कोयल गाती गीत।
आसमान में बादल छाए, हुई धरा से प्रीत।।
प्रकृति रूप अद्भुत लगता है, आई ऋतु हेमंत।
फूल खिले नव वन उपवन में, आया देख बसंत।।

सरिता बहती मन को भाए, भौरें करते गान।
रंग बिरंगे फूल खिले हैं, बसती है नव जान।।
ऋतु परिवर्तन की बेला है,भाने लगा लसंत।
फूल खिले नव वन उपवन में, आया देख बसंत।।

हवा मंद सी चलती जग में, मन को भाए खूब।
तरुवर झूमे कल-कल करते, मिले पपीहे डूब।।
हवा सुहानी चलती देखो, मौसम हुआ ज्वलंत।
फूल खिले नव वन उपवन में, आया देख बसंत।।

आम बौर जब आने लगती, खिलते सुंदर फूल।
पतझड़ आया मन को भाया, आई है नव मूल।।
नभ में आभा करते तारे, कहते सभी सुमंत।
फूल खिले नव वन उपवन में, आया देख बसंत।।

शैलेन्द्र पयासी, साहित्यकार

आवाज के जादूगर को स्वर ऋषि की उपाधि से नवाजा गया

राजेश जैन दद्दू

इंदौर। मां अहिल्या की नगरी के जैन गोरव अनुराग आकाशवाणी उद्घोषक अपनी आवाज के शहंशाह दिगंबर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन के कार्यकारणी एवं समंग्र जैन समाज के रत्न अनूराग जैन को भारत के भजन सम्राट श्री अनूप जलोटा जी द्वारा "स्वर ऋषि" की उपाधि से अलंकृत होने पर इंदौर दिगम्बर जैन समाज के वरिष्ठ समाजसेवी डॉ जैनेन्द्र जैन महावीर ट्रस्ट के अध्यक्ष अमित कासलीवाल फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोहर झांझरी हंसमुख गांधी टीके वेद राकेश विनायका राजेश जैन दद्दू भूपेंद्र जैन विपुल बाझलं मयंक जैन एवं फेडरेशन की राष्ट्रीय शिरोमणि संरक्षिका श्रीमती पुष्पा कासलीवाल श्रीमती रेखा जैन श्रीमती मुक्ता जैन आदि समाज जन ने हार्दिक बधाई दी।

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 की सरेआम उड़ाई जा रही है धज्जियां

नरेन्द्र रेहू

हरियाणा सरकार ने सूचना का अधिकार अधिनियम के प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर सभी विभागों को सख्त निर्देश जारी किए थे, सरकार ने स्पष्ट किया था कि राज्य जन सूचना अधिकारी और प्रथम अपीलीय प्राधिकारी द्वारा दिए गए आरटीआई के पूरे जवाब और अपील के आदेश सभी संबंधित दस्तावेजों के साथ आरटीआई ऑनलाइन पोर्टल पर अपलोड करना अनिवार्य होगा।

लेकिन विडंबना देखिए दिनांक 01.10.2025 को लगाई गई आरटीआई पर कोई एक्शन नहीं लिया गया। उसके बाद प्रथम अपील लगाई गई उस पर भी कोई एक्शन नहीं लिया गया। जो कि सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 की सरेआम धज्जियां पंचायत विभाग हरियाणा के पंचायत कार्यालय बरवाला जिला हिसार द्वारा उड़ाई जा रही है। जो कि खण्ड विकास एवं पंचायत अधिकारी बरवाला जिला हिसार, ग्राम पंचायत बालक जिला हिसार की आरटीआई का जवाब देने के लिए हल्के में ले रहा है। इससे यह सिद्ध होता है कि आरटीआई के मामले में जवाब ना देना सरेआम भ्रष्टाचार की ओर संकेत दे रहा है। उन्होंने कहा कि उन द्वारा निम्न तथ्यों पर सूचना मांगी गई थी। जो उन्हें इतना समय बीत जाने के बावजूद भी नहीं मिली। राज्य सरकार के नियमों की सरेआम धज्जियां उड़ाई जा रही है। माननीय पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय चंडीगढ़ द्वारा डॉ0 संदीप कुमार गुप्ता बनाम राज्य सूचना आयोग और अन्य के मामले में याचिका संख्या:-सीडब्ल्यूपी/36216/2018 निर्णय तिथि:-19.02.2025 को आर0टी0आई0 के मामले में दिये गये आदेशानुसार सूचना ईमेल के माध्यम से भी मांगी जा सकती है। माननीय उच्च न्यायालय दिल्ली द्वारा आदित्य चौहान व अन्य बनाम यूनियन ऑफ इण्डिया और अन्य के मामले में याचिका संख्या: डब्ल्यूपी/8830/2025 निर्णय तिथि: 02.07.2025 के मामले में दिये गये आदेशानुसार अब दस्तावेज ईमेल व पेन ड्राइव के साथ भी मिलेंगे।

मांगी गई सूचना निम्नलिखित है :-

1. वर्तमान ग्राम पंचायत बालक को अब तक कुल कितनी अनुदान/ग्रांट (grant प्राप्त हुई है - प्रत्येक अनुदान का स्रोत (जिला/राज्य/केंद्र/योजना का नाम), प्राप्त तिथि, कुल राशि और उस राशि का किस वर्ष माह में जारी हुआ तथा उन अनुदानों का किस-किन लेखा/विकास कार्यों में उपयोग हुआ प्रत्येक खाते/विकास कार्य के अनुसार अलग-अलग विस्तृत व्यय-रिपोर्ट (बिल/वाउचर/भुगतान पीडीएस/चालान इत्यादि) उपलब्ध करवाई जाए।

१. ग्राम पंचायत बालक द्वारा अब तक कौन-कौन से विकास कार्य कराए गए हैं (सभी वार्षिक/योजना-वार), प्रत्येक कार्य का संक्षिप्त विवरण, कार्य आरम्भ/समापन तिथि, स्वीकृत बजट, वास्तविक व्यय, कार्य का कार्य देश/ठेका विवरण (ठेकेदार का नाम, ठेका संख्या, भुगतान की सूची और संबंधित बिल/रसीद)।

३. अब तक ग्राम सभा की कुल कितनी बैठकों/सत्रों का आयोजन हुआ है -प्रत्येक ग्राम सभा की तिथि, स्थान, एजेण्डा, वहां लिए गए सभी निर्णय/प्रस्ताव (मिनिट्स), और उन बैठकों में उपस्थित सभी व्यक्तियों की सूची तथा उनकी हस्ताक्षर/हस्ताक्षरित उपस्थिति-पतियाँ (attendance sheets) की प्रमाणित प्रतियाँ उपलब्ध कराएँ।

4. गांव बालक में कुल कितनी स्ट्रीट लाइटें लगाई गई थीं- प्रत्येक स्ट्रीट लाइट का स्थान (सड़क/गली-नाम या GPS/नज़दीकी चिन्ह), कितनी अभी ठीक कार्यरत हैं और कितनी खराब/निष्क्रिय हैं- प्रत्येक लाइट का ब्रांड/मॉडल, खरीद मूल्य, इंस्टॉलेशन खर्च, रिपेयर/रखरखाव में हुए खर्च और यदि किसी लाइट की रिप्लेसमेंट हुई है तो उसकी जानकारी व बिल/रसीदें।

5. गांव बालक में कुल कितने पौधे लगाए गए प्रत्येक पौधे की लोकेशन, प्रजाति (species), रोपण की तिथि, रोपण का स्रोत/सप्लायर (यदि खरीदे गए हों), कितने अभी जीवित हैं और कितने मर चुके हैं मरने वाले पेड़ों/पौधों की संख्या और संबंधित रिपोर्ट/फोटो (यदि उपलब्ध) और रिप्लेसमेंट नीति/रिपोर्ट।

6. पौधों की बाउंड्री/बाड़ के लिए कुल कितने एंगल (angles / खंभे/ स्टील एंगल) लगाए गए - प्रत्येक एंगल का वज़न, ऊँचाई, प्रकार/आयाम, और सभी एंगल्स का कुल वज़न बताने की कृपा करें। (यदि सफल रोल/सप्लायर बिल/चालान उपलब्ध है तो संलग्न प्रतियाँ दें।)

7. कुल कितनी जाली (mesh/grill) लगाई गई- प्रत्येक जाली का वज़न, जाली व एंगल किस-किस कीमत पर खरीदे गए (खरीद के बिल/इन्वॉइस), और जाली लगाने का कुल श्रम/इंस्टालेशन खर्च का हिसाब (भुगतान रसीदें सहित)।

8. बस क्यू-शेल्टर (bus queue shelter) बनने पर कुल कितना खर्च हुआ -प्रत्येक घटक (मटेरियल) का वज़न, मटेरियल की खरीद कीमतें (बिल/वाउचर), तथा शेल्टर लगाने/स्थापना में कुल कितना श्रम/कॉन्ट्रैक्ट/उपलब्ध खर्च हुआ अलग-अलग विवरण के साथ।

9. बस-शेल्टर पर जो फोटो/चित्र लगाया गया है (यदि सरपंच के अलावा किसी व्यक्ति का फोटो लगाया गया है) वह किसकी अनुमति (permission) से लगाया गया था? यदि किसी अधिकारी/व्यक्ति ने अनुमति दी है तो उसकी अनुमति की लिखित प्रति उपलब्ध कराएँ और उस अधिकारी/व्यक्ति का नाम तथा पद बताइए। साथ ही उल्लेखित है कि "सरपंच प्रतिनिधि" शब्द कहाँ से किस अधिकार के अंतर्गत प्रयुक्त किया गया है- क्या इसका कोई नियम/आदेश/अधिकार पत्र मौजूद है? उसका संदर्भ / प्रमाणपत्र उपलब्ध कराएँ और संविधान/कानून में इस शब्द के प्रयोजन का कोई आधिकारिक आधार हो तो उसका उद्धरण/दस्तावेज़ दें।

10. गांव बालक के वेलकम बोर्ड का कुल वज़न, उसमें प्रयुक्त मटेरियल का प्रकार एवं वज़न, बोर्ड को लगाने का कुल खर्च तथा यदि बोर्ड पर किसी सामान्य व्यक्ति का फोटो है और उसके नीचे "ग्राम सेवक" लिखा हुआ है तो वह फोटो किस अधिकारी/अनुमति द्वारा लगाया गया और "ग्राम सेवक" का पद किस अधिकारी/नीति/नियम के अनुसार है उस व्यक्ति का नाम/अनुमति-प्रमाण/आधिकारिक दस्तावेज उपलब्ध कराएँ और "ग्राम सेवक" पद का अर्थ तथा नियम बताएं।

11. दोनों जोहड़ों (ponds) पर लगाए गए बैठने के शेड (sheds) में क्या-क्या पदार्थ/मटेरियल इस्तेमाल किए गए प्रत्येक मटेरियल का वज़न, प्रत्येक मटेरियल की खरीद कीमत (बिल/इन्वॉइस), तथा शेड लगाने का कुल खर्च (श्रम/कॉन्ट्रैक्ट/इंस्टॉलेशन) बताने की कृपा करें।

12. सीमेंट की कुल कितनी कुर्सियाँ/बेंचें लगाई गई हैं वे किस-किस लोकेशन पर रखी गई, प्रत्येक का यूनिट-कास्ट और टोटल खर्च बताएँ और संबंधित खरीद/दर्ज बिल व भुगतान की प्रतियाँ उपलब्ध कराएँ।

सर्दियों में रेगुलर वॉकिंग करने से आपके बीमार होने का खतरा 50% तक कम हो सकता है।

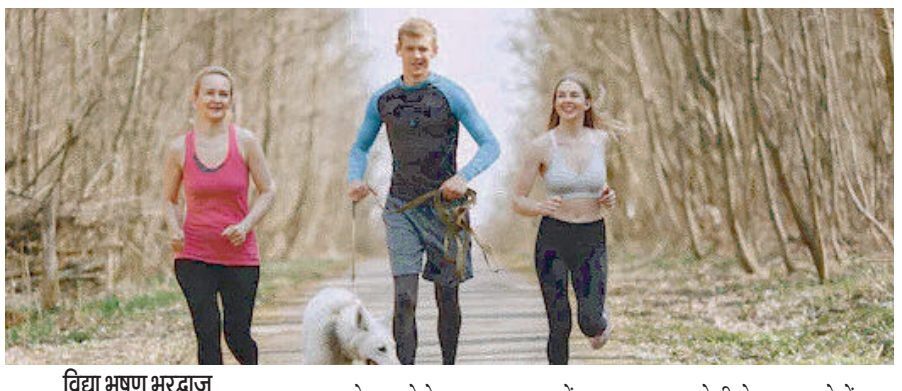

विद्या भूषण भरद्वाज

कैसे? आपके इम्यून सिस्टम के सर्कुलेशन को सुपरचार्ज करके। हालांकि कई लोग आम सर्दी के लिए गिरते तापमान को दोषी मानते हैं, लेकिन मौसमी बीमारी के पीछे असली वजह अक्सर इनएक्टिविटी होती है।

रिसर्च से पता चलता है कि जो लोग सर्दियों के महीनों में रेगुलर वॉकिंग करते हैं, उनके बीमार पड़ने का चांस उन लोगों की तुलना में 30% से 50% कम होता है जो बैठे रहते हैं।

ठंड खुद हमारे डिफेंस को कमजोर करने के बजाय, यह मूवमेंट की कमी है जो हमारे इम्यून रिस्पॉन्स को धीमा कर देती है, जिससे फ्लू के पीक सीजन के दौरान हमारे शरीर के लिए पैथोजन्स से बचाव करना मुश्किल हो जाता है।

रेगुलर वॉकिंग पूरे शरीर में इम्यून सेल सर्कुलेशन की एफिशिएंसी को बेहतर बनाकर हेल्थ के लिए एक ज़रूरी कैटलिस्ट का काम करती है।

हार्वर्ड मेडिकल स्कूल की बताई गई बातों के अनुसार, यह फिजिकल एक्टिविटी डिफेंसिव सेल्स को तेज़ी से मूव करने और पोटेंशियल इन्फेक्शन का ज़्यादा तेज़ी से पता लगाने में मदद करती है।

रोज़ाना टहलने का पक्का इरादा करके, भले ही हवा तेज़ हो, आप अपने इम्यून सिस्टम को वह ज़रूरी सपोर्ट देते हैं जिसकी उसे सतर्क और असरदार रहने के लिए ज़रूरत होती है, यह साबित करता है कि एक्टिव रहना भी उतना ही ज़रूरी है जितना गर्म रहना।

सोर्सः हार्वर्ड मेडिकल स्कूल. (2020). मौसम को मात देनाः एक्सरसाइज कैसे इम्यूनिटी बढ़ाती है. हार्वर्ड हेल्थ पब्लिशिंग.

एक प्रभावी व्यक्ति बनने के लिए खुद को कैसे बेहतर बनाया जाए?

● डॉ. विजय गर्ग

संचार का अर्थ है कि आप विपरीत व्यक्ति को कैसे समझते हैं और उसके प्रति कैसी प्रतिक्रिया देते हैं। अभिवादन के साथ स्वयं संचार भाग शुरू करने का प्रयास करें। यह संचार में घनिष्ठ बंधन लाता है। आप हर चीज पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं, यह आपको अच्छी तरह से पता होना चाहिए, अन्यथा सब कुछ व्यर्थ हो जाएगा।

हम सभी ऐसे समाज में रहते हैं जहां हर चीज का मूल्यांकन पहली नजर से ही किया जाता है। बिस्कुट के पैकेट को लपेटने से लेकर कार जैसा दिखने तक। हम केवल बाहरी दिखावे में विश्वास करते हैं। हम इतनी तेजी से आगे बढ़ गए हैं कि पहली नजर में ही निर्णय लेना हम सभी की आदत बन गई है। लेकिन पृथ्वी पर कुछ ही स्थान बचे हैं जहां हम केवल अपने सुपरिभाषित व्यक्तित्व से पहुंच सकते हैं, अन्यथा हमें किसी भी समय बाहर निकाल दिया जाएगा। तो यहां मैं कुछ ऐसा साझा करूंगा जो आपको एक प्रभावी व्यक्ति बनने के लिए अपने दृष्टिकोण और व्यक्तित्व को सही करने में मदद करेगा।

यहां आपके दृष्टिकोण को सुधारने के लिए कुछ सुझाव दिए गए हैं। सुबह की गतिविधियों के लिए एक निश्चित कार्यक्रम निर्धारित करें। सुनिश्चित करें कि आप कोई भी गतिविधि न छोड़ें। जिस व्यक्ति को आप देखते हैं, उसे सुप्रभात कहें। इससे निश्चित रूप से आपके मन को तनाव दूर करने में मदद मिलेगी और यदि संभव हो तो चाय या कॉफी जैसे गर्म तरल पदार्थ और यहां तक कि गर्म पानी की भी आदत डालने का प्रयास करें। योग या व्यायाम हमारे शरीर और मन के लिए भी बहुत स्वास्थ्यवर्धक हैं। अपने दिन की शुरुआत खाली पेट न करें अन्यथा यह आपका ध्यान भंग कर सकता है। कभी भी अपनी प्राथमिकता पर हावी होने की कोशिश न करें। इससे उस व्यक्ति पर आपकी नकारात्मक छाप पड़ सकती है। किसी को प्रभावित करने के लिए आपके पास अच्छे संचार कौशल होने चाहिए। संचार का अर्थ है कि आप विपरीत व्यक्ति को कैसे समझते हैं और उसके प्रति कैसी प्रतिक्रिया देते हैं। अभिवादन के साथ स्वयं संचार भाग शुरू करने का प्रयास करें। यह संचार में घनिष्ठ बंधन लाता है। आप हर चीज पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं, यह आपको अच्छी तरह से पता होना चाहिए, अन्यथा सब कुछ व्यर्थ हो जाएगा। गलत संचार से बचने का प्रयास करें। यदि आप यह नहीं समझ पाए हैं कि दूसरे व्यक्ति ने आपको क्या बताया है तो उसे दोबारा कहने के लिए कहें। कभी-कभी यह अजीब लग सकता है, लेकिन किसी भी गलत संचार से बचने का यह सबसे अच्छा तरीका है। अब अपनी समझ बढ़ाने के लिए आपको उस व्यक्ति की तरह सोचना और बात करनी होगी जिससे आप बात कर रहे हैं। इससे आपके लिए उनके दिल में प्रवेश करने का रास्ता बन जाएगा। जिससे आगे संवाद करने में काफी मदद मिलेगी। कोई भी सलाह या समाधान देने से पहले यह

सुनिश्चित कर लें कि आप जानते हैं कि उनके मन में क्या चल रहा है। यह आपको बताएगा कि वे आपकी सलाह का पालन करेंगे या उसे कूड़ेदान में फेंक देंगे। एक प्रभावी व्यक्ति बनने के लिए आपको शारीरिक भाषा का भी कुछ ज्ञान होना चाहिए जो संचार की गुणवत्ता को बढ़ाता है। जिस व्यक्ति से आप बात करते हैं उसे हमेशा अलविदा कहें। आपके जाने के बाद भी यह एक अच्छा प्रभाव लाता है। यह एक प्रभावी व्यक्ति का गुण है। एक प्रभावी व्यक्ति कभी भी दूसरे व्यक्ति पर हावी होने की कोशिश नहीं करता, बल्कि संचार के माध्यम से अच्छे संबंध स्थापित करने का प्रयास करता है।

एक दिन में कोई भी व्यक्ति प्रभावी नहीं बन सकता। लेकिन एक दिन वह निश्चित रूप से एक प्रभावी व्यक्ति बन सकता है। और यहीं पर रवैया और व्यक्तित्व सही और मजबूत होना चाहिए।

डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त

विज़न 2047 विकसित भारत- तीव्र विकास-ट्री प्रोटेक्शन एक्ट 2026:समय की अनिवार्य आवश्यकता -पर्यावरणीय संतुलन की वैश्विक चुनौती एक समग्र विश्लेषण

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं
गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर भारत जब स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे करने की ओर बढ़ रहा है,तब विजन 2047 के तहत इंफ्रास्ट्रक्चर विकास को अभूतपूर्व गति दी जा रही है। एक्सप्रेसवे, रेलवे कॉरिडोर, औद्योगिक क्लस्टर,स्मार्ट सिटी, सौर और पवन ऊर्जा परियोजनाएँ हर क्षेत्र में निर्माण कार्य तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं। लेकिन इस तेज़ विकास की कीमत अक्सर पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, प्राकृतिक पारिस्थितिकी के विघटन और मानव जीवन पर पड़ने वाले दीर्घकालिक दुष्प्रभावों के रूप में चुकानी पड़ रही है।इसी तेज़ विकास की दौड़ में यदि प्राकृतिक संसाधनों, विशेषकर वृक्षों और जैव विविधता कीअनदेखी की जाती है,तो यह विकास दीर्घकाल में आत्मघाती सिद्ध हो सकता है।विश्व स्तर पर यह स्वीकार किया जा चुका है कि विकास और पर्यावरण को आमने-सामने खड़ा करना एक पुरानी और असफल सोच है; आज आवश्यकता है संतुलन, सह- अस्तित्व और उत्तरदायी नीति निर्माण की।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में,जहाँ जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पहले से ही स्पष्ट हैं अत्यधिक गर्मी,सूखा, बाढ़ और मरुस्थलीकरण, वहाँ वृक्षों की कटाई केवल पर्यावरणीय क्षति नहीं, बल्कि मानव जीवन, आजीविका और सामाजिक स्थिरता पर सीधा प्रहार है।इस संदर्भ में यह स्पष्ट होता जा रहा है कि मौजूदा वन कानून, पर्यावरणीय स्वीकृति और क्षतिपूरक वनीकरण की व्यवस्थाएँ ज़मीनी स्तर पर पर्याप्त प्रभावी सिद्ध नहीं हो रहीं।सवाल सिर्फ पेड़ों का नहीं, पेड़ केवल लकड़ी या बाधा नहीं हैं, वे जलवायु संतुलन, भूजल संरक्षण, जैव विविधता और मानव स्वास्थ्य के मूल स्तंभ हैं।जब सड़क या परियोजना के नाम पर हजारों पेड़ काटे जाते हैं, तो उसका प्रभाव केवल स्थानीय नहीं, बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर पड़ता है। हीटवेव,जल संकट रेगिस्तानीकरण और जैव विविधता का क्षरण, ये सभी उसी असंतुलित विकास की देन हैं।यही कारण है कि ट्री प्रोटेक्शन एक्ट 2026 जैसी सशक्त और समर्पित विधायी पहल अब समय की अनिवार्य माँग बन चुकी है।अब यह स्पष्ट हो चुका है कि मौजूदा वन कानून और पर्यावरणीय स्वीकृति की प्रक्रियाएँ पर्याप्त नहीं हैं। इसलिए एक सख्त, स्पष्ट और जवाबदेह ट्री प्रोटेक्शन एक्ट 2026 की आवश्यकता है, जो:बिना वैकल्पिक योजना के पेड़ कटाई को दंडनीय अपराध घोषित करे,हर बड़े विकास प्रोजेक्ट में ट्री ऑडिट और ट्री इम्पैक्ट असेसमेंट अनिवार्य बनाए एक पेड़ काटो = दस पेड़ लगाओ से आगे बढ़कर पेड़ के जीवित रहने की कानूनी जिम्मेदारी तय करे शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में हेरिटेज और देशी वृक्षों को विशेष संरक्षण दे स्थानीय समुदायों और ग्राम सभाओं को निर्णय प्रक्रिया में भागीदार बनाए, पश्चिमी राजस्थान और खेजड़ी: विकास के सामने प्रकृति की संभवततः आवाज़ है।

साथियों बात अगर हम पश्चिमी राजस्थान का खेजड़ी बचाओ आंदोलनः विकास बनाम जीवन का सवाल इसको समझने की करें तो,पश्चिमी राजस्थान, विशेषकर बीकानेर और थार मरुस्थल क्षेत्र,में सोलर परियोजनाओं के लिए हो रही खेजड़ी के पेड़ों की अंधाधुंध कटाई ने एक बार फिर यह प्रश्न खड़ा कर दिया है कि क्या नवीकरणीय ऊर्जा के नाम पर भी प्रकृति के साथ अन्याय स्वीकार्य है। सोलर ऊर्जा निस्संदेह स्वच्छ और भविष्य की ऊर्जा है,किंतु यदि इसके लिए स्थानीय पारिस्थितिकी पारंपरिक ज्ञान और जीवनदायी वृक्षों को नष्ट किया जाए,तो यह हरित विकास नहीं बल्कि हरित विडंबना कहला सकता है,इसी पृष्ठभूमि में खेजड़ी बचाओ आंदोलन ने जन्म लिया, जो अब केवल एक स्थानीय विरोध नहीं,बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पर्यावरणीय चेतना का प्रतीक बनता जा रहा है। यह आंदोलन बताता है कि विकास परियोजनाएँ केवल आंकड़ों और मेगावाट में नहीं आँकी जा सकतीं;उन्हें मानव, संस्कृति औरप्रकृति के साथ उनके संबंधों के संदर्भ में भी परखा जाना चाहिए।सोलर प्रोजेक्ट्स और पर्यावरणीय विरोधाभास

यह एक बढ़ीविडंबना है कि जिन सोलर प्रोजेक्ट्स को जलवायु परिवर्तन के समाधान के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, वही यदि स्थानीय पर्यावरण को नष्ट करें, तो उनका नैतिक आधार कमजोर हो जाता है।अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अब यह स्वीकार किया जा रहा है कि रिन्यूअबले एनर्जी प्रोजेक्ट्स को भी इंविरोंमेन्टल एंड सोशल इम्पैक्ट असेसमेंट के कठोर मानकों से गुजरना चाहिए।पश्चिमी राजस्थान का आंदोलन इसी वैश्विक विमर्श का हिस्सा है, जो यह सवाल उठाता है कि क्या ग्रीन एनर्जी के नाम पर ग्रीन कवर को खत्म किया जा सकता है?

साथियों बात अगर हम 1730 का खेजड़ली बलिदानः विश्व के शुरुआती पर्यावरण आंदोलनों में एक अमर अध्याय इसको समझने की करें तो,खेजड़ी बचाओ आंदोलन की आत्मा 1730 के खेजड़ली बलिदान में निहित है, जहाँ अमृता देवी बिश्नोई के नेतृत्व में 363 लोगों ने खेजड़ी के पेड़ों की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए थे।उनका अमर वाक्य सिर सांटे रूंख रहे, तो भी सस्तो जाण आज भी पर्यावरणीय संघर्षों के लिए प्रेरणास्रोत है।यह घटना केवल भारतीय इतिहास का नहीं,बल्कि वैश्विक पर्यावरण आंदोलन के इतिहास का भी एक मील का पत्थर है। इसे दुनिया के सबसे शुरुआती संगठित पर्यावरण आंदोलनों में गिना जाता है और 1970 के दशक के चिपको आंदोलन की वैचारिक प्रेरणा माना जाता है। खेजड़ली का यह बलिदान बताता है कि जब राज्य सत्ता और संसाधन-दोहन आमने- सामने हों, तब नैतिक साहस और सामुदायिक एकजुटता इतिहास की दिशा बदल सकती है।खेजड़ी: केवल एक पेड़ नहीं, मरुस्थल की जीवनरेखाखेजड़ी पश्चिमी राजस्थान की पारिस्थितिकी का आधार है। यह पेड़ न केवल मिट्टी के कटाव को रोकता है, बल्कि भूजल संरक्षण, पशुपालन, कृषि और जैव विविधता में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सूखे और कठोर जलवायु में भी खेजड़ी जीवन का संबल है। यही कारण है कि इसे राजस्थान का राज्य वृक्ष घोषित किया गया है।अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण अध्ययन बताते हैं कि शुष्क और अर्ध- शुष्क क्षेत्रों में ऐसे देशज वृक्षों की कटाई मरुस्थलीकरण को तेज़ करती है, जिससे जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और गहरे होते हैं।इसलिए खेजड़ी की रक्षा केवल स्थानीय या सांस्कृतिक मुद्दा नहीं, बल्कि वैश्विक पर्यावरणीय जिम्मेदारी भी है।

साथियों बातें अगर हम ट्री प्रोटेक्शन एक्ट 2026: समय की अनिवार्य आवश्यकता को समझने की करें तो अब यह स्पष्ट हो चुका है कि मौजूदा वन कानून और पर्यावरणीय स्वीकृति प्रक्रियाएँ पर्याप्त नहीं हैं। इसलिए एक सख्त, स्पष्ट और जवाबदेह ट्री प्रोटेक्शन एक्ट 2026 की आवश्यकता है, जो विशेष रूप से वृक्षों की सुरक्षा पर केंद्रित हो। इस प्रस्तावित कानून के अंतर्गतःएक बिना वैकल्पिक योजना के पेड़ कटाई को दंडनीय अपराध घोषित किया जाए।हर कटे हुए पेड़ के बदले उससे अधिक संख्या में, उसी पारिस्थितिकी क्षेत्र में वृक्षारोपण अनिवार्य हो।केवल रोपण नहीं, बल्कि पेड़ों के जीवित रहने की कानूनी जिम्मेदारी तय की जाए।स्थानीय समुदायों को निर्णय-प्रक्रिया में वैधानिक भागीदारी दी जाए।परियोजना स्वीकृति में सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व को भी मानदंड बनाया जाए।यह कानून विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम सिद्ध हो सकता है।लोकतंत्र, सहभागिता और पर्यावरणीय न्यायखेजड़ी बचाओ आंदोलन यह स्पष्ट करता है कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी नीति का विषय नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक सहभागिता का प्रश्न है। जब स्थानीय समुदाय, किसान, महिलाएँ और युवा एकजुट होकर प्रकृति के लिए खड़े होते हैं, तब वह आंदोलन केवल विरोध नहीं, बल्कि सतत विकास का जीवंत मॉडल बन जाता है।

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय स्तरपर इसको समझने की करें तो अब एनवायरमेंटल डेमोक्रेसी की अवधारणा को महत्व दिया जा रहा है,जिसमें जनता को प्राकृतिक संसाधनों से जुड़े निर्णयों में निर्णायक भूमिका मिलती है। पश्चिमी राजस्थान का यह आंदोलन इसी वैश्विक सोच का भारतीय संस्करण है।भारत का भविष्य केवल चौड़ी सड़कों और ऊँची इमारतों से नहीं, बल्कि जीवित नदियों, सुरक्षित जंगलों और संरक्षित पेड़ों से तय होगा।अब समय आ गया है कि ट्री प्रोटेक्शन एक्ट 2026 जैसे सशक्त कानून के माध्यम से विकास और पर्यावरण के बीच वास्तविक संतुलन स्थापित किया जाए। क्योंकि पेड़ बचेंगे तभी जीवन बचेगा, और जीवन बचेगा तभी विकास टिकाऊ होगा।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि विकास का भविष्य संतुलन में है,बलिदान में नहीं,विजन 2047 का भारत तभी वास्तव में विकसित कहलाएगा, जब उसकी प्रगति प्रकृति के विनाश पर नहीं,बल्कि उसके संरक्षण पर आधारित होगी। खेजड़ी बचाओ आंदोलन हमें याद दिलाता है कि विकास का रास्ता पेड़ों को काटकर नहीं, बल्कि उन्हें बचाकर भी बनाया जा सकता है।अब समय आ गया है कि नीति-निर्माता, उद्योग और समाज मिलकर यह स्वीकार करें कि वृक्ष केवल बाधा नहीं, बल्कि भविष्य की नींव हैं। ट्री प्रोटेक्शन एक्ट 2026 केवल एक कानून नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारी नैतिक जिम्मेदारी का प्रतीक होना चाहिए।

मध्यप्रदेश के बजट से किसानों को क्या उम्मीदें हैं?

(आलेख : अखिलेश यादव)

16 फरवरी से मध्यप्रदेश विधानसभा का बजट सत्र शुरू होने वाला है। हालांकि इस बीच बहुत कुछ बदल गया है, अनेक चीजों ने अपने अर्थ खो दिए हैं, मगर तब भी बजट से जनता को कुछ उम्मीदें रहती ही हैं। उन्हें लगता है कि शायद इस बार बजट में ऐसा कुछ आये, जिससे उनकी घुटन कुछ कम हो, थोड़ी-बहुत राहत मिले। ऐसी ही उम्मीद में मध्यप्रदेश का किसान है। होना गलत भी नहीं है, आखिर इस प्रदेश में उसका योगदान बहुत है। 2024-25 के आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, कृषि क्षेत्र अभी भी मप्र की अर्थव्यवस्था की स्रीढ़स्र बना हुआ है। राज्य की लगभग 70% आबादी अभी भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से खेती पर निर्भर है। कहने की आवश्यकता नही कि इतनी बड़ी आबादी को अनदेखा करके लाया गया कोई बजट इस आबादी का तो छोड़यि, प्रदेश का भी भला नहीं कर सकता। इस हिसाब से क्या किया जाना चाहिए, यह इस बात पर निर्भर करता है कि जिनके लिए किया जाना है, वे किस स्थिति में हैं। इसे जानने के ज्यादा विस्तार में जाने की बजाय सिर्फ कुछ ताजी हैडलाइन्स पर नजर डालना काफी होगा।

एक – किसान आत्महत्याओं के मामले में देश के सबसे कुख्यात 4 प्रदेशों में से एक मध्यप्रदेश में अकेले नवम्बर के महीने में 9 किसानों की आत्महत्या दर्ज हुई। इनमें से चार प्रदेश के मुख्यमंत्री के गृह जिले उज्जैन में हुईं। लागत न निकल पाना और कर्ज का बढ़ता जाना इसकी एकमात्र वजह है। गुना का एक किसान तो 30 लाख रुपया चुकाने के बाद भी कर्ज के फंदे से बाहर नहीं निकल पाया और उसने आत्महत्या कर ली।

दो -- केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान के गृह जिले और संसदीय क्षेत्र सहित उनके गृह प्रदेश में खाद के लिए लाइन में लगे किसानों पर लाठी चार्ज हुए और दिन-रात खड़े रहे भूखे-प्यासे किसानों में से महिलाओं सहित कई किसानों की मौत की खबरें इतनी अधिक थीं कि दरबारी मीडिया को भी उन्हें छापना पड़ा।

तीन -- चम्बल एक्सप्रेस-वे में जमीन अधिग्रहित किये जाने से घबराए श्योपुर के एक किसान ने अपनी जान ले ली।

चार -- सीहोर और विदिशा के किसानों ने लगातार तीसरी बार फसल के बर्बाद होने पर सोयाबीन की शवयात्रा ही निकाल दी।

पांच -- पिछली साल की शुरुआत में बुन्देलखंड और मालवा में और उसके बाद लगभग पूरे प्रदेश में बेमौसम की बारिश से कहीं ज्यादा, तो कहीं कम ज्यादा, औसतन 30 से 35 प्रतिशत फसल चौपट हो गयी। इनमें से किसी को भी प्रधानमंत्री फसल बीमा का फायदा मिला हो, ऐसी झूठी खबर भी नहीं आई।

छह – देश के साथ प्रदेश में भी किसान तेजी से अपनी खेती छोड़ रहे हैं। नेशनल सैंपल सर्वे ऑर्गनाइजेशन के एक पुराने सर्वेक्षण के अनुसार, तब देश के लगभग 40% किसान खेती छोड़ना चाहते थे, क्योंकि यह घाटे का सौदा और जोखिम भरा लगता था। सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसाइटीज (सीएसडीएस) के एक अध्ययन के अनुसार, अब लगभग 76% किसान किसी बेहतर विकल्प के मिलने पर खेती छोड़ना चाहते हैं। यह प्रवृत्ति मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय औसत से अधिक है।

सात – किसान तेजी से मजदूरों में बदलते जा रहे हैं। प्रदेश के सभी जिलों में खेती करने वाले मुख्य किसानों की संख्या में कमी आई है और कृषि मजदूरों की संख्या बढ़ी है। उदाहरण के लिए, सीधी जिले में किसानों की संख्या में 23.5% की कमी और सिंगरौली में 26% की कमी दर्ज की गई थी। 2011 की जनगणना के अनुसार, मध्य प्रदेश में पहली बार स्किसानोंस् की संख्या में 11.93 लाख की कमी आई थी, जबकि कृषि मजदूरों की संख्या में 47.91 लाख की वृद्धि हुई। यह रुझान 2011 के बाद भी जारी है।

आठ – किसानों की जमीन सिकुड़ रही है। राज्य में किसानों के पास औसत जमीन का आकार 2010-11 में 1.15 हेक्टेयर था और 2015-16 तक घटकर 1.08 हेक्टेयर रह गया। इसके बाद के 10 वर्षों में यह रफ़्तार और तेजी से बढ़ी है, क्योंकि खेत जितने छोटे होते हैं, खेती उतनी ही अलाभकारी होती जाती है और फिर उसे छोड़ना ही एक विकल्प बचता है।

दशा को बयान करने वाली दुर्दशाओं की कहानियां और भी हैं, मगर फिलहाल बात को इन आठ दिशाओं तक ही सीमित रखते हैं। कोई भी जिम्मेदार सरकार अपने बजट को तैयार करते समय इन हालात से निजात पाने के उपायों को ही प्राथमिकता देगी। इस लिहाज से मध्यप्रदेश सरकार के वर्ष 2026-27 के बजट में जो प्रावधान किये जाने की जरुरत है, उनमें से कुछ इस प्रकार होने चाहिए।

उपज के दाम दिलाना और लागत घटाना

खेती को अलाभकारी बनाने की बुनियादी वजहों को दूर करना इनमे से एक होगा। इसके लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को कथनी और करनी दोनों में वास्तविक बनाने के कदम उठाये जाने चाहिये। एमएसपी का निर्धारण ए-2+एफएल की बजाय सी-2+50% के फार्मूले से किया जाए। व्यवहार में अभी इसके दायरे में सिर्फ गेंहू, धान, दलहन, तिलहन आते हैं, इसे बढाया जाए और सभी फसलों, शाक सब्जियों, दूध और अंडा तथा वनोपज के लिए भी एमएसपी निर्धारित की जाए। एमएसपी पर खरीदी सुनिश्चित करने के लिए खरीदी केन्द्रों का विस्तार और देखरेख का तंत्र मजबूत किया जाए तथा उससे कम दाम पर खरीद को दंडनीय अपराध घोषित किया जाए। इसी के साथ समय पर खाद – यूरिया और डीएपी – की उपलब्धता जी गारंटी की जानी चाहिए। खाद और बीज की कालाबाजारी, उसमें भी नकली थमाए जाने की बीमारी एक बड़ी समस्या बन गयी है। किसानों की आमदनी में कमी की एक वजह बिजली है : ऐसे प्रबंध किये जाने चाहिए कि खेती के समय पर आपूर्ति हो और इसके निजीकरण तथा स्मार्ट मीटर की योजना तत्काल बंद की जाए।

सिचाई मुहैया कराना एक और आयाम है। अभी प्रदेश में मात्र 17 सिचाई नहरों से और करीब ढाई प्रतिशत तालाब से होती है। मतलब कोई 70 से 80 प्रतिशत खेती के लिए भरोसेमंद और स्थायी सिंचाई बंदोबस्त नहीं है। लघु और मध्यम सिंचाई परियोजनाओं के लिए समुचित बजट प्रावधान और नदियों तथा पारम्परिक जल स्रोतों के निजीकरण पर रोक की नीति बनाकर ही यह स्थिति सुधारी जा सकती है।

लागत का एक और आयाम ऋण का है। अभी सहकारी समितियां और कोऑपरेटिव बैंकों में केसीसी धारक किसानों को बिना ब्याज के कर्ज उपलब्ध कराया जाता है, यह सुविधा राष्ट्रीयकृत बैंकों में और प्राइवेट बैंकों में भी उपलब्ध कराई जाए, ताकि साहूकारों से ऋण लेने को हतोत्साहित किया जा सके।

सहकारी क्षेत्र में कृषि उद्योग

घाटा कम करने का एक और तरीका जिला स्तर पर कृषि आधारित उद्योगों का तंत्र खड़ा करके उपज को ज्यादा विकसित और परिवर्धित करने और इस तरह किसान की आय बढाने का है। इसके लिए विशेषकर गन्ना, सरसों, दूध तथा आदिवासी क्षेत्रों में वनोपज के मामले में सहकारीकरण (कोऑपरेटिव्स) को प्रोत्साहित करने के कदम उठाये जाने चाहिए। केरल के मॉडल से काफी कुछ सीखा जा सकता है। इसी के साथ जो सहकारी कृषि उद्यम बंद का दिए गए हैं, जैसे कैलारस (मुरैना) का शक्कर कारखाना, उनके पुनर्जीवन के लिए भी बजट प्रावधान किये जाने चाहिए।

ग्रामीण बाजार और रोजगार को प्रोत्साहन

भूमि के सिकुड़ते आकार के चलते ग्रामीण अर्थव्यवस्था सिर्फ खेती-किसानी पर जीवित नहीं रह सकती। इसके लिए रोजगार सृजन के कई कदम एक साथ उठाने होंगे। इनमे सबसे प्रमुख तो मनरेगा की मजबूती है। राज्य सरकार को अपनी रीढ़ की सलामती का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए मनरेगा में किये गए बदलावों, पहले से ही घाटे में चल रहे राज्यों पर इसके खर्च का बोझ बढाने वाली कथित जी-रामजी योजना को वापस लेने का संकल्प पारित कर केंद्र को अपनी राय से अवगत कराना होगा। इसी के साथ इस योजना में काम के दिन बढ़कर 200, न्यूनतम वेतन बढ़ाकर कमसेकम 600 रुपये प्रतिदिन करने के लिए प्रावधान करने होंगे। यह एक आयाम है। बाकी रोजगार के अवसर सरकारी नौकरियों में भर्ती पर लगी रोक हटाकर और सभी खाली पदों को भरकर, आबादी के अनुपात में नए पद सृजित कर पैदा करने होंगे।

मनमाने अधिग्रहण और बेदखली

मप्र किसी न किसी बहाने से भूमि के मनमाने अधिग्रहण का अड्डा बना हुआ है। एक्सप्रेस-वे के नाम पर हों या किसी और बहाने, हर मामले में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष मकसद कारपोरेट, उनमे भी जो दरबारी कार्पोरेट्स हैं, उन्हें फायदा पहुँचाना है। चम्बल से लेकर सिंगरौली तक एक जैसी कहानी है। अब तो आदिवासी इलाके और संरक्षित वन तथा आदिवासी बसाहटें भी इस तरह के अधिग्रहण की शिकार बन रही हैं। इन्हें रोकना होगा और जहां बहुत जरूरी है, वहां विस्थापित ग्रामीणों के सम्पूर्ण पुनर्वास के अलावा वर्ष 2013 के कानून के हिसाब से बाजार दरों से कम-से-कम चार गुना मुआवजा देना सुनिश्चित करना होगा।

ग्रामीण आबादी की भूमिहीनता की दूसरी बड़ी वजह भूमि के बंटवारे का काम न होना है। भूमि सुधार क़ानून का पालन करते हुए बेनामी और मनमानी से अभी तक सामंतों के कब्जे में कैद जमीन को छीन कर, सरकारी जमीन को चीन्ह कर भूमिहीनों में बांटने से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार लाया जा सकता है। इसी का एक और पहलू आदिवासियों और परंपरागत वनवासियों के वनाधिकार का है। देश के सबसे अधिक आदिवासी आबादी वाले प्रदेश में ही यह क़ानून अपनी भावना के अनुरूप लागू नहीं किया गया। अब उलटा अमल – आदिवासियों की बेदखली का अमल और किया जा रहा है। आदिवासियों के लिए किये जाने वाले बजट आवंटन में भी वास्तविक राशि के हिसाब से काफी कमी आई है।

शोध और अनुसंधान

कृषि शिक्षा, कृषि विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों की संख्या बढ़ाने के प्रावधान जरूरी हैं। जिन स्कूलों में कृषि से संबंधित शिक्षा दी जाती है, उनकी संख्या में भी वृद्धि की आवश्यकता है। कृषि क्षेत्र में शोध और अनुसंधान को प्रोत्साहन दिया जाए। सरकार जैविक और प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने के नाम पर जितने गाल बजाती है, उसके दसवें अंश के लिए भी इस खेती के लिए खर्च नहीं करती, इसके बीज तक उपलब्ध नहीं कराये जाते। इस दिशा में ठोस आबंटन किये जाने चाहिए।

सामाजिक कदम

इसके अलावा, कुछ अन्य कदम भी उठाये जा सकते हैं : जैसे वृद्ध किसानों के लिए पांच हजार रूपये प्रतिमाह पेंशन, महिला किसानों को बिशेष प्रोत्साहन, ग्रामीण क्षेत्रों में आवासहीन परिवारों को आवास लगभग 5 लाख रुपए प्रति आवास कम से कम 1000 वर्ग फीट क्षेत्र में बनवाकर आधुनिक सुविधाओं के साथ उपलब्ध कराना, ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों के बंद होने को रोका जाना, शिक्षा का लोकव्यापीकरण करना, डेयरी व्यवसाय, पशुपालन, मुर्गा पालन, मछली पालन आदि को प्रोत्साहित करना, पलायन रोकने तथा प्रवासी श्रमिकों की संख्या को कम करने के लिए, ग्रामीण क्षेत्रों के स्तर पर रोजगार सुनिश्चित कराना वगैरा-वगैरा। इस सबके साथ यदि गाँवों को ज्ञान के अँधेरे से बाहर निकालना है, तो ग्रामीण क्षेत्रों में अंधविश्वास, कुरीतियों, कुप्रथाओं, निरक्षरता आदि के खिलाफ अभियान चलाया जाए। वैज्ञानिक और प्रगतिशील मूल्यों का प्रचार-प्रसार करने के काम को भी प्रोत्साहित तथा बजट संवर्धित करना होगा।

(लेखक अखिल भारतीय किसान सभा की केंदीय समिति के सदस्य तथा मप्र किसान सभा के महासचिव हैं।

जयकारों के बीच हुई प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा, भक्ति के रंग में रंगे शहरवासी, मंत्रो से पावन हुई धरा

भक्ति के रंग में रंगे शहरवासी, मंत्रो से पावन हुई धरा

बेंगलूरु. वैदिक मंत्रोच्चार और भक्ति-भाव से सरोबर वातावरण में होसकोटे में स्थित नव निर्मित श्री आईमाता मंदिर में बुधवार को भव्य प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव दिव्यता और गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। पूरे आयोजन के दौरान मंदिर परिसर आध्यात्मिक आभा से आलोकित रहा और श्रद्धालुओं की भीड ने इसे एक पवित्र तीर्थ के रूप में परिवर्तित कर दिया। सीरवी समाज व आईपंथ के धर्मगुरू दीवान माधवसिंह के सानिध्य में आईमाताजी व अन्य देवी देवताओं की मूर्तियों का प्राण प्रतिष्ठा ,अखण्ड ज्योति, स्थापना विधि-विधान से सम्पन्न हुई। प्रातः धर्मगुरु दीवान माधव सिंह के सानिध्य में माता का पाट और ध्वजा जयकारों के साथ मंदिर में लाया गया, जहां धर्मगुरु दीवान माधव सिह जी ने मंदिर में तोरण वादा। इसके बाद मंदिर में पंडित वी.एच. विनोद दीक्षित के नेतृत्व में तुमकूर से आए पंडितों ने विधान प्रारंभ किया। जैसे ही मूल गंभारे में आईमाता की मूर्ति स्थापित की गई श्रद्धालु खुशी से झूम उठे। संस्था के अध्यक्ष कानाराम परिहारिया ने बधाई दी। महिलाओं ने मंगलगान करते हुए नृत्य किया। लाबुराम बर्फा परिवार ने आईमाता की मूर्ति को स्थापित किया। प्रतिष्ठा होते ही लाभार्थी गोपाल सिंह राठौड़ परिवार ने मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण किया। कानाराम परिहारिया परिवार ने विधि-विधानपूर्वक मुख्य कलश इंडा स्थापित किया। रमेश राठौड़ परिवार ने अखंड ज्योत स्थापित किया। ध्वजारोहण और कलश स्थापना के दौरान पुष्पवर्षा भी की गई। लोगों ने एक-दूसरे गले लगाकर प्रतिष्ठा की बधाई दी। लाभार्थी परिवारों ने अन्य देवी-देवताओं की प्रतिमाओं को स्थापित किया एवं श्रृंगार, भोग एवं आरती की। मंदिर का पट्ट खुलते ही प्रथम दर्शन हेतु भक्तों की कतारें लग गई। यज्ञशाला में मंत्रोच्चारों के बीच हवन पूर्णाहुति हुई। दोपहर में समारोह को संबोधित करते हुए आईपंथ के धर्मगुरू दीवान माधवसिंह ने कहा कि माता के स्थापित भैल रथ हमारी परंपराओ को बचाए रखना जरूरी है। दीवान ने कहा कि इस रथ को अपने यहां दर्शनाथ अवश्य ले जाएं एवं सभी को इसकी महता से अवगत करवाएं। दिवान ने कहा

कि यह माता का चलता फिरता मंदिर हैआईपंथ के प्रचार -प्रसार में इसकी भूमिका अहम है। धर्मगुरू ने कहा कि आईपंथ माता के बताए मार्ग पर चल रहा है एवं,माता द्वारा दीवान परंपरा को दिए मार्गदर्शन के अनुसार वे भी समाज में दिखावा न करते हुए सही रास्ते पर चलने की प्रेरणा देते है। धर्मगुरू का सीरवी समाज होसकोटे की ओर से

संस्था के अध्यक्ष कानाराम परिहारिया, सचिव विंजाराम पंवार, उपाध्यक्ष विंजाराम आगलेचा, सहसचिव दिलीप गहलोत, कोषाध्यक्ष भीयाराम गहलोत, सह-कोषाध्यक्ष गोपाल राम पंवार, मीडिया प्रभारी रमेश परिहारिया, महामंत्री भूडाराम कालूराम मंत्री लाबुराम, मेघाराम पूर्व अध्यक्ष हापुराम राठौड़, महेंद्र राठौड़ पूर्व सचिव चेनाराम बर्फा, सेराराम आगलेचा, राजू लचेटा सूलीबेले, ओमप्रकाश चोयल, भंवरलाल परिहार, प्रभुराम, गोपालसिंह राठौड़, हीराराम चोयल, रमेश राठौड़ के नेतृत्व में सम्पूर्ण कार्यकारिणी ने धर्मगुरू का माला साफा व नजराना पेश कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय वडेरों के पदाधिकारियों, सीरवी महासभा कर्नाटक के पदाधिकारियों व लाभार्थियों व प्रतिष्ठा में सहयोग देने वाले नवयुवक मंडलों गैर, मडलों, महिला मंडलो का सम्मान किया गया। धर्मगुरू दीवान व कार्यकारिणी ने कथा वाचक संत अमृत महाराज, पंडित वी.एच. विनोद दीक्षित का सम्मान किया गया। इस अवसर पर अतिथि के रूप में सीरवी महासभा तमीलनाडु के अध्यक्ष आर.बी. चौधरी, सीरवी महासभा कर्नाटक प्रांत के अध्यक्ष बाबूलाल परिहार, सचिव अमरचन्द सानपुरा, कोषाध्यक्ष पोकरराम राठौड़, पूर्व सचिव वीरमराम सोलंकी,भाजपा युवा नेता सुनील सीरवी का सम्मान किया गया। मंदिर में सजावट के लिए बलेपेट सास्कृतिक समिति के अध्यक्ष कमल किशोर काग, सुरेश लचेटा , नानकराम परिहार का विशेष सहयोग रहा। मंच संचालन मोहन सीरवी, प्रेम सीरवी सूरत ने किया।

क्यों गायब हो रहे बच्चे?

(हरियाणा में हर दिन औसतन 12 बच्चे लापता—क्या यह सिर्फ गुमशुदगी है या संगठित मानव तस्करी का खामोश जाल?)

घर से निकले बच्चे जब वापस नहीं लौटते, तो सवाल सिर्फ "कहां गए" का नहीं रहता—सवाल यह भी होता है कि किसने उन्हें गायब किया। आंकड़े बता रहे हैं कि गुमशुदगी अब व्यक्तिगत हादसा नहीं, बल्कि एक गहराता सामाजिक और आपराधिक संकट बन चुकी है।

-डॉ. प्रियंका सौरभ

हरियाणा में गुमशुदगी के बढ़ते मामले अब केवल पुलिस रजिस्टरों या अख़बारों की सुर्खियों तक सीमित नहीं रहे हैं। ये मामले उन हजारों परिवारों की अनकही पीड़ा हैं, जिनके घरों से कोई सदस्य काम, पढ़ाई या रोज़मर्रा के काम के लिए निकला और फिर कभी वापस नहीं लौटा। हर दिन औसतन 12 बच्चों का लापता होना और वर्ष 2025 में 17,500 से अधिक गुमशुदगी के मुकदमों का दर्ज होना, किसी भी संवेदनशील समाज के लिए गहरी चिंता का विषय होना चाहिए। यह स्थिति न सिर्फ कानून-व्यवस्था की चुनौती है, बल्कि सामाजिक ताने-बाने पर भी गंभीर सवाल खड़े करती है।

गुमशुदगी का सबसे भयावह पहलू यह है कि इसके पीछे अब केवल व्यक्तिगत विवाद, घरेलू कारण या आकस्मिक घटनाएं नहीं रहीं। जांच में बार-बार यह संकेत मिल रहे हैं कि कई मामलों की जड़ें मानव तस्करी जैसे संगठित अपराधों से जुड़ी हुई हैं। पुलिस के अनुसार करीब 75 प्रतिशत मामलों को ट्रेस कर लिया गया है, लेकिन शेष 25 प्रतिशत अधूरे मामले ही असली चिंता का कारण हैं। यही वे मामले हैं जिनमें लापता व्यक्ति का कोई सुराग नहीं मिलता और जिनके पीछे अंतरराज्यीय गिरोह, अवैध प्लेसमेंट एजेंसियां और आर्थिक शोषण के नेटवर्क काम कर रहे होते हैं।

विशेष चिंता इस बात की है कि महिलाएं और नाबालिग बच्चे इस संकट का सबसे बड़ा शिकार बन रहे हैं। बेहतर रोजगार, उज्ज्वल भविष्य या शिक्षा का सपना दिखाकर बच्चों और युवाओं को उनके घरों से दूर ले जाया जाता है। कई बार माता-पिता खुद मजबूरी में बच्चों को ऐसे एजेंटों के हवाले कर देते हैं, जिन्हें वे भरोसेमंद समझते हैं। बाद में वही भरोसा परिवारों के लिए जीवनभर का पछतावा बन जाता है। बिहार, झारखंड और उड़ीसा जैसे राज्यों से जुड़े नेटवर्क इस बात की पुष्टि करते हैं कि यह समस्या स्थानीय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर फैले संगठित अपराध का हिस्सा है।

हरियाणा में भिक्षावृत्ति और बालश्रम से मुक्त कराए गए 350 से अधिक बच्चों के मामले इस सच्चाई को और उजागर करते हैं। चौक-चौराहों, बस अड्डों और धार्मिक स्थलों पर दिखाई देने वाले ये बच्चे किसी संयोग का परिणाम नहीं हैं। ये एक सुनियोजित तंत्र के तहत यहां लाए जाते हैं, जहां उनसे काम कराया जाता है या उन्हें भिक्षावृत्ति में धकेला जाता है। इनसे होने वाली कमाई का बड़ा हिस्सा गिरोह या प्लेसमेंट एजेंसियों के पास चला जाता है, जबकि बच्चों को अमानवीय परिस्थितियों में जीने को मजबूर किया जाता है। यह भी गौर करने योग्य है कि मानव तस्करी अब अकेला अपराध नहीं रहा। पुलिस और जांच एजेंसियों का मानना है कि नशा तस्करी, साइबर अपराध, एक्सटॉर्शन और मानव तस्करी जैसे अपराध अब एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। एक ही नेटवर्क कई तरह के अवैध कामों को अंजाम दे रहा है। यही कारण है कि गुमशुदगी के मामलों की जांच अब संगठित अपराध के नजरिये से की जा रही है। यह बदलाव सही दिशा में उठाया गया कदम है, लेकिन इसके लिए संसाधनों, तकनीक और राजनीतिक इच्छाशक्ति की भी उतनी ही जरूरत है।

हरियाणा पुलिस द्वारा वर्ष 2026 के लिए तैयार किया गया अपराध नियंत्रण रोडमैप उम्मीद की एक किरण जरूर दिखाता है। संगठित अपराधियों पर कड़ी निगरानी, तकनीक के माध्यम से पहचान और ट्रैकिंग, अंतरराज्यीय समन्वय और समयबद्ध जांच जैसे कदम निस्संदेह आवश्यक हैं। पुलिस महानिदेशक का यह स्पष्ट संदेश कि बच्चों और महिलाओं से जुड़े मामलों में किसी भी स्तर पर देरी बर्दाश्त नहीं की जाएगी, भरोसा पैदा करता है। लेकिन सवाल यह है कि क्या केवल प्रशासनिक सख्ती से इस गहरी समस्या को पूरी तरह सुलझाया जा सकता है?

सच्चाई यह है कि गुमशुदगी और मानव तस्करी जैसी समस्याएं केवल कानून-व्यवस्था के दायरे में सुलझने वाली नहीं हैं। इनके पीछे गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी और सामाजिक असमानता जैसे कारण भी काम करते हैं। जब परिवारों के पास रोजगार के सीमित अवसर होते हैं और बेहतर जीवन का सपना उन्हें हर दिन बेचैन करता है, तब वे अक्सर गलत हाथों में फंस जाते हैं। ऐसे में सरकार की जिम्मेदारी केवल अपराधियों को पकड़ने तक सीमित नहीं

हो सकती, बल्कि उन परिस्थितियों को बदलने की भी होनी चाहिए, जो लोगों को असुरक्षित बनाती हैं।

समाज की भूमिका यहां सबसे अहम हो जाती है। अक्सर लोग लापता बच्चों या संदिग्ध गतिविधियों को देखकर भी चुप रह जाते हैं। "यह किसी और का मामला है" जैसी सोच अपराधियों के हौसले बढ़ाती है। यदि समय रहते संदिग्ध प्लेसमेंट एजेंसियों की सूचना दी जाए, भिक्षावृत्ति में लगे बच्चों को नजरअंदाज न किया जाए और लापता होने की सूचना तुरंत पुलिस तक पहुंचाई जाए, तो कई मामलों को शुरुआती स्तर पर ही रोका जा सकता है। जागरूक समाज ही किसी भी अपराध के खिलाफ सबसे मजबूत दीवार बन सकता है। बाल अधिकार विशेषज्ञों का यह कहना बिल्कुल सही है कि बच्चों को तस्करी से मुक्त कराना केवल पहला कदम है। असली चुनौती उनके पुनर्वास, शिक्षा और मानसिक काउंसलिंग की है। तस्करी का शिकार हुए बच्चे गहरे मानसिक आघात से गुजरते हैं। यदि उन्हें समय पर सही देखभाल और अवसर नहीं मिले, तो वे दोबारा उसी अंधेरे चक्र में फंस सकते हैं। सरकार और समाज दोनों को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि ऐसे बच्चों का भविष्य सुरक्षित और सम्मानजनक हो।

हरियाणा में गुमशुदगी के मामले हमें यह सोचने पर मजबूर करते हैं कि विकास और आर्थिक प्रगति के दावों के बीच कहीं हम मानवीय मूल्यों को तो नहीं खोते जा रहे। यह समस्या केवल आंकड़ों का खेल नहीं, बल्कि हर उस परिवार की कहानी है, जो आज भी किसी दरवाजे की आहट पर उम्मीद लगाए बैठा है। यदि अब भी इसे केवल एक खबर या एक प्रशासनिक चुनौती समझकर नजरअंदाज किया गया, तो आने वाले वर्षों में इसकी कीमत कहीं ज्यादा भारी होगी।

समय की मांग है कि गुमशुदगी को अपराध के साथ-साथ मानवीय संकट के रूप में देखा जाए। सरकार, पुलिस, समाज और नागरिक—सभी को अपनी-अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। तभी यह सुनिश्चित किया जा सकेगा कि कोई बच्चा, कोई महिला या कोई नागरिक यूं ही गुम न हो जाए और उसका परिवार जिंदगी भर इंतजार करने को मजबूर न रहे।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

राजा सरायकेला को चुनाव में समर्थन ही नहीं गजपतिय परंपरा अनुसार चरण प्राक्षलन भी

सरायकेला में उत्कलीय परंपरा व आचरण आज भी जीवित

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

सरायकेला। सरायकेला नगर पंचायत चुनाव के अध्यक्ष पद के लिए प्रत्याशी सरायकेला राजा प्रताप आदित्य सिंह देव के जनसंपर्क अभियान का गजब का नजारा देखने को मिल रहा है । 1620 ई में उन्हीं के वंशजों द्वारा बसाया गया सरायकेला स्टेट जिसे पूरी गजपति राजा के अनुमति से यहां राज करने के भेजा गया था । अनेक परिवार है जिन्हें इतिहास मालूम है तदनुसार परंपरा भी । राजा के आगमन पर उनकी चरण प्रक्षालन देखी जा रही है । जो आकर्षण का केंद्रबिंदु बना हुआ है सरायकेला नगरीय क्षेत्र में । रानी साहिबा अरूणिमा सिंहदेव के कार्यकाल में किये गये कार्यों का चर्चा राजा से मिलकर लोग स्वयं कर रहे हैं एवं उसकी तारीफ भी कर रहे हैं । जो शायद ही कहीं और नजर आता हो।

इसके तहत उन्होंने नगर पंचायत क्षेत्र के कोड़ासाई, दारघासाई, हाट टोला, हंसाहुड़ी, पट्टनायक टोला एवं जेल रोड में वे घर घर अपने समर्थकों के साथ पहुंचकर लोगों से संपर्क करते नजर आये । तथा अपने भावी एजेंडे की जानकारी देते हुए लोगों को अपने एवं सरायकेला के पक्ष में मतदान करने की अपील की।

दौरान सरायकेला नगर पंचायत की पूर्व अध्यक्षा रानी अरुणिमा सिंह देव पैर फ्रैक्चर होने के बावजूद भी व्हीलचेयर पर जनसंपर्क अभियान में शामिल रही हैं । साथ ही बॉबी सिंह देव, पिंकू महंती, श्रीधर सिंह देव, सौरभ शेखर, जफर, जयप्रकाश सिंह देव उर्फ बबलू सिंह देव, बिजु मोदक, सानो सिंह देव एवं जलेश्वर सिंह देव जनसंपर्क अभियान में शामिल रहे।

उन्होंने लोगों से हाथियों के पास न जाने और उनके साथ सेल्फी न लेने की अपील की

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर ; हाथियों के हमलों से इंसानों की मौत का आंकड़ा दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। जो चिंता की बात है। आज वन और पर्यावरण मंत्री गणेश राम सिंह खुंटिया ने इस बारे में अपनी बात रखी है। उन्होंने लोगों से हाथियों के पास न जाने और हाथियों के साथ सेल्फी न लेने की रिक्वेस्ट की है ।मंत्री ने कहा कि कई जगहों पर लोग सेल्फी लेने के लिए हाथियों का पीछा करते हैं। कई बार हाथी गुस्सा होकर हमला कर देते हैं। इसलिए हाथियों के पास न जाएं और न ही सेल्फी लें। राज्य में हाथियों की बढ़ती संख्या चिंता की बात है।

जब हाथी आते हैं तो उन्हें माइक्रोफोन से चेतावनी दी जाती है। 1800 इलाकों में 2300 से ज़्यादा हाथी हैं। स्थानीय MLA और MP से बातचीत पूरी हो चुकी है। मंत्री ने कहा कि जंगल की सीमा बढ़ाने का प्लान बनाया जा रहा है।

वक्त कभी किसी का सगा नहीं

- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

खूबसूरत सृष्टि की रचना करने वाली कुदरत ने खूबसूरत मानवीय जीवन के साथ वक्त का एक ऐसा पहिया संलग्न कर दिया है कि मानवीय जीवन चक्र के साथ वक्त का पहिया भी घूमता रहता है !जो किसी का सगा नहीं है !मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र ऐसा मानता हूं कि बस मानवीय जीवन को ही अपनी बुद्धि के बल पर परिस्थितियों के अनुसार कुशाग्र बुद्धि से वक्त का सकारात्मक उपयोग कर ऐसा कार्य करना चाहिए कि हमारा नाम सदियों, पीढ़ियों तक टिमटिमाते तारों की तरह इस सृष्टि में जगमगाता रहे,क्योंकि वक्त हमेशा एक सा नहीं रहता वक्त का पहिया कैसे करवट बदल देता है, पता ही नहीं चलेगा, क्योंकि वक्त अपनी गति से चलता रहेगा वक्त का पहिया हमेशा एक जैसा नहीं रहता कितना भी पकड़ लो फिसलता जरूर है,यह वक्त है साहब बदलता जरूर है।

साथियों बात अगर हम वक्त के तकाजे की करें तो हम खुद अपने पुराने और आज के वक्त का ही विश्लेषण कर ले कि कुछ साल या दशक पूर्व हम क्या थे और अब क्या हैं, तो हमें पता चल ही जाएगा कि वक्त कभी एक सा नहीं रहता !! इतना ही नहीं अगर हम अपने ही समाज या पीढ़ियों का विश्लेषण करें तो हमें अंदाज लग जाएगा कि वक्त का पहिया कैसे घूमकर बदलते रहता है इसलिए ही बड़े बुजुर्गों का कहना है, समय-समय की बात है आज तुम्हारा समय है कल हमारा समय भी आएगा साथियों बात अगर हम हमारे शहर जिले राज्य या राष्ट्र की करें तो हमें ऐसे कई उदाहरण मिल जाएंगे,अपने को बड़े शहंशाह, तीरंदाज कहने मानने वाले लोगों को भी हमने लाचार, तारतार होते देखा होगा, जिनके पास बेशुमार,दौलत पावर था और सबकुछ खरीद सकते थे परंतु वक्त का पहिया ऐसा फिसला कि उनका पैसा, पावर सब कुछ जमींदोज हो गया और पैसे पैसे को मोहताज हो गए,हमने सुना ही नहीं अपनी आंखों से देखा भी जरूर होगा या फिर हमें यह अपने उम्र के बढ़ते चढ़ाव पर देखने को जरूर मिल जाएगा।

साथियों बात अगर हम वक्त के पहिए की करें तो यह किसी का सगा नहीं है बड़े से बड़े उद्योगपति, राजनीतिज्ञ अधिकारी, मंत्री, उच्च पदस्थ व्यक्ति यहां तक कि कभी उनके पास उद्योग, सत्ता, शासन-प्रशासन पावर की चाबी उनके हाथ में रहने वालों के वक्त के पहिए ने भी कैसे करवट बदल ली है कि उनका हाथ आज खाली है !जिनकी तूती बोलती थी आज उनकी बोलती बंद है !! इसलिए कहते हैं साहब यह वक्त है बदलता जरूर है इसलिए समय रहते कुछ ऐसा काम करो कि वक्त को भी तुम्हारे पास रुकने पर मजबूर होना हो जाना पड़े। साथियों बात अगर हम कुछ सालों से वक्त के पहिए की करवट बदलने की करें तो कैसे हम खुशहाल थे, फिर कोरोना महामारी आई, वैक्सीनेशन ड्राइव चला, आज करीब-करीब नियंत्रित है, सत्ता के बदलाव, कुछ चिन्हित उद्योगपतियों द्वारा बैंक घोटाला, देश के बाहर और भगोड़े घोषित इत्यादि यह सब बातें हमने राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय सत्ता परिवर्तन, 90 दिन से चले आ रहे हैं रूस यूक्रेन युद्ध सहित अनेक व्यवहार देखें जिसके आधार पर हम कह सकते हैं कि वक्त किसी का सगा नहीं करवट जरूर बदलता है। साथियों बात अगर हम वक्त के पहिए की करें तो, जीवन में सबसे अनमोल चीज है वक्त जिसका चक्र निरंतर रूप से चलते रहता है। इसे कोई रोक नहीं सकता जैसे रेत को कितनी भी जोर से मुट्ठी में बांध के रखो वह फिसलती रहती है। इसी तरह वक्त भी सबको अवसर देता है अगर उस अवसर को समय रहते पहचान कर उसका लाभ ना उठाएं तो वह मौका और वक्त दोनों हाथ से निकल जाता है। इसीलिए कहते हैं मनुष्य चाहे तो सब कुछ नियंत्रण कर सकता है सिवाय वक्त के ! वह एक बार चला गया तो लाख कोशिश कर लो वह कभी वापस नहीं आ सकता। साथियों बात अगर हम वक्त शब्द की करें तो, वक्त अर्थात समय ये सिर्फ बोलने के लिए तीन शब्द है किंतु इसमें मनुष्य का संपूर्ण जीवन समाहित है। मनुष्य के जीवन में वक्त का बड़ा ही महत्व है। हमारा पूरा जीवन समाप्त हो जाता है किंतु वक्त का ना कोई प्रारंभ है और ना कोई अंत। वह अपने गति के अनुसार चलते ही रहता है। वक्त किसी के लिए नहीं रुकता और ना ही कोई इसे रोक सकता है। यह वक्त सबके लिए समान गति से चलता है फिर चाहे वह राजा हो या रंक, वक्त के आगे किसी की नहीं चलती। साथियों बात अगर हम वक्त के महत्व की करें तो, वक्त और धन की दौड़ में हमेशा वक्त की जीत होती है। पैसा कमाना आपको अमीर बना देगा लेकिन वक्त को जीतना आपको सफल बनाएगा। वक्त फिर कभी लौट कर नहीं आता, आपको इसका उपयोग करने का केवल एक ही मौका मिलता है। यदि आप उस समय वक्त का सदुपयोग करते हैं, तो यह आपको कल लाभकारी परिणाम देगा। वक्त बहुत कीमती है और इसे अच्छे कामों में खर्च करने की जरूरत है। वक्त के मूल्य को समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बदलता रहता है। वक्त फिर कभी किसी के जीवन में एक जैसा नहीं हो सकता। जो व्यक्ति वक्त के महत्व को जानता है और उसका सम्मान करता है, वह चतुर और बुद्धिमान माना जाता है। वह व्यक्ति अपने जीवन में सभी सफलता प्राप्त करने वाला होता है। क्योंकि यह जिंदगी, वक्त और अपना अनुभव यही सिखाता है कभी उदासी की आग है जिंदगी, कभी खुशियों का बाग है जिंदगी, हंसना और रुलाना राग है जिंदगी, कड़वे-मीठे अनुभवों का स्वाद है जिंदगी, इसलिए हमारा दिल चाहता कुछ और है और होता कुछ और है परंतु एक बात तो निश्चित है वक्त जरूर बदलता है और जिंदगी में उतार-चढ़ाव, सुख-दुःख दो पहलू हैं जो हर एक की जिंदगी में आते ही हैं।

एआई पर लगाम, झूठ पर विराम: नया डिजिटल फरमान

• प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

डिजिटल दुनिया में अब लापरवाही और देरी की कोई जगह नहीं बची है। एक झूठी खबर या फर्जी वीडियो कुछ ही मिनटों में लाखों लोगों तक पहुंच सकता है और समाज में उथल-पुथल मचा सकता है। इसी गंभीर खतरे को समझते हुए भारत ने तकनीकी इतिहास में एक सख्त और निर्णायक कदम उठाया है। 10 फरवरी 2026 को जारी संशोधित आईटी नियमों के तहत सरकार ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को अवैध और हानिकारक सामग्री हटाने के लिए केवल तीन घंटे का अल्टीमेटम दिया है, जो 20 फरवरी 2026 से लागू होगा। पहले जहां कंपनियों को 36 घंटे का समय मिलता था, अब वह घटकर मात्र तीन घंटे रह गया है। यह फैसला साफ संदेश देता है कि भारत अब डीपफेक, फर्जी खबरों और डिजिटल अराजकता के खिलाफ किसी भी तरह की ढिलाई बर्दाश्त नहीं करेगा।

इन नए नियमों का सबसे महत्वपूर्ण पहलू एआई-जनरेटेड सामग्री पर विशेष ध्यान देना है। अब सभी कृत्रिम रूप से तैयार किए गए ऑडियो, वीडियो और चित्रों को स्पष्ट रूप से लेबल करना अनिवार्य होगा। प्लेटफॉर्म्स को यह सुनिश्चित करना होगा कि उपयोगकर्ता यह घोषणा करें कि उनकी सामग्री एआई से बनी है या नहीं। साथ ही, जहां संभव हो, स्थायी मेटाडेटा को एम्बेड करना होगा, ताकि मूल स्रोत का पता लगाया जा सके। यह व्यवस्था डीपफेक और फर्जी वीडियो के बढ़ते खतरे पर रोक लगाने में अत्यंत सहायक सिद्ध होगी। इससे महिलाओं, सार्वजनिक हस्तियों और आम नागरिकों की गरिमा सुरक्षित होगी और समाज में विश्वास का वातावरण बनेगा।

तीन घंटे की समयसीमा पहली नजर में सोशल मीडिया कंपनियों के लिए कठिन लग सकती है, लेकिन वास्तव में यह एक सकारात्मक और रचनात्मक दबाव है। मेटा, यूट्यूब और एक्स जैसे बड़े प्लेटफॉर्म्स अब अपनी तकनीकी क्षमताओं को और अधिक मजबूत करेंगे। एआई आधारित मॉडरेशन सिस्टम, ऑटोमेटेड डिटेक्शन टूल्स और रियल-टाइम मॉनिटरिंग तकनीकों का तेजी से विकास होगा। भारत का विशाल डिजिटल बाजार कंपनियों को मजबूर करेगा कि वे बेहतर और अधिक जिम्मेदार प्रणालियां विकसित करें। इससे न केवल भारत में, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी डिजिटल सुरक्षा के मानक ऊंचे होंगे। यह नियम कंपनियों को नवाचार के लिए प्रेरित करता है, न कि उन्हें सीमित करता है।

इस नीति का सबसे बड़ा लाभ महिलाओं, बच्चों और कमजोर वर्गों को मिलेगा। गैर-सहमति वाली अंतरंग तस्वीरों और वीडियो के मामलों में अब केवल दो घंटे की समयसीमा तय की गई है, जो पीड़ितों को त्वरित राहत प्रदान करेगी। पहले ऐसी सामग्री घंटों या दिनों तक वायरल हो जाती थी, जिससे मानसिक और सामाजिक नुकसान होता था। अब हटाने की प्रक्रिया इतनी तेज होगी कि नुकसान को काफी हद तक रोका जा सकेगा। सरकार ने स्पष्ट किया है कि यह नियम राष्ट्रीय सुरक्षा, सार्वजनिक व्यवस्था और बाल यौन शोषण से जुड़ी सामग्री पर विशेष ध्यान देता है। इससे डिजिटल हिंसा में कमी आएगी और समाज में सुरक्षा की भावना मजबूत होगी।

नियमों की मजबूती को और बढ़ाने के लिए सरकार ने प्लेटफॉर्म्स पर अनुपालन की जिम्मेदारी को और सख्त किया है। यदि कोई इंटरमीडियरी इन निर्देशों का पालन नहीं करता, तो उसे सुरक्षित हार्बर संरक्षण खोने का खतरा होगा, जो कंपनियों को और अधिक जिम्मेदार बनाएगा। साथ ही, उपयोगकर्ता शिकायतों के निवारण को और मजबूत किया गया है, जिससे पीड़ितों को तेज न्याय मिलेगा। प्लेटफॉर्म्स को अब हर तिमाही उपयोगकर्ताओं को एआई दुरुपयोग के खतरों पर स्पष्ट चेतावनी जारी करनी होगी, ताकि लोग स्वयं सतर्क रहें। ये प्रावधान डिजिटल पारिस्थितिकी को अधिक जवाबदेह और सक्रिय बनाते हैं, जहां सुरक्षा केवल नियमों से नहीं, बल्कि सामूहिक जागरूकता से भी मजबूत होगी।

एआई कंटेंट पर लेबलिंग और ट्रेसेबिलिटी का प्रावधान भारत के डिजिटल इतिहास में एक मील का पत्थर है। अब फर्जी वीडियो और झूठी खबरों की पहचान करना पहले से कहीं अधिक आसान होगा। मेटाडेटा को हटाना या बदलना अपराध की श्रेणी में आएगा, जिससे अपराधियों के लिए छिपना कठिन हो जाएगा। यह व्यवस्था लोकतंत्र की रक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी, क्योंकि चुनावी समय में गलत सूचनाएं सबसे बड़ा खतरा बन जाती हैं। भारत अब जिम्मेदार एआई गवर्नेंस का एक आदर्श मॉडल प्रस्तुत कर रहा है, जहां नवाचार और सुरक्षा के बीच संतुलन बनाए रखा गया है।

इन नियमों के लागू होने से प्लेटफॉर्म्स का अनुपालन स्तर बढ़ेगा और उपयोगकर्ताओं का अनुभव अधिक सुरक्षित बनेगा। अब लोग बिना भय के अपनी बात साझा कर सकेंगे, क्योंकि उन्हें भरोसा होगा कि हानिकारक सामग्री पर तुरंत कार्रवाई होगी। शिकायत निवारण तंत्र को भी मजबूत किया गया है, जिससे उपयोगकर्ताओं को तेजी से न्याय मिलेगा। पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ने से डिजिटल इकोसिस्टम अधिक विश्वसनीय बनेगा। भारत का इंटरनेट अब केवल विशाल ही नहीं, बल्कि सुरक्षित और भरोसेमंद भी होगा, जो डिजिटल विकास के लिए एक मजबूत आधार तैयार करेगा।

दीर्घकालिक दृष्टि से यह नियम डिजिटल साक्षरता और जागरूकता को भी बढ़ावा देगा। लोग एआई से बनी सामग्री को पहचानना सीखेंगे और फर्जी खबरों के प्रति अधिक सतर्क होंगे। सरकार, शैक्षणिक संस्थान और तकनीकी कंपनियां मिलकर जागरूकता अभियान चलाएंगी। इससे समाज में डिजिटल जिम्मेदारी की भावना विकसित होगी। सुरक्षित और नियंत्रित वातावरण के कारण विदेशी और घरेलू निवेश में भी वृद्धि होगी, क्योंकि नवाचार के लिए स्थिरता आवश्यक होती है। यह नीति भारत को एक वैश्विक डिजिटल लीडर के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

हालांकि कुछ आलोचक इसे कठोर और अव्यावहारिक मानते हैं, परंतु डिजिटल युग की तीव्र गति को देखते हुए यह समयसीमा आज की सबसे बड़ी आवश्यकता बन चुकी है। आज कोई भी सूचना कुछ ही पलों में करोड़ों लोगों तक पहुंच जाती है, जिससे उसके प्रभाव भी उतने ही व्यापक और गहरे होते हैं। ऐसे में केवल त्वरित और निर्णायक कार्रवाई ही वास्तविक सुरक्षा सुनिश्चित कर सकती है। सरकार ने संतुलन साधने का प्रयास किया है, ताकि न तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर अनावश्यक अंकुश लगे और न ही लापरवाही को बढ़ावा मिले। भारत का तीन घंटे का अल्टीमेटम यह स्पष्ट संदेश देता है कि डिजिटल स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी भी उतनी ही अनिवार्य है। निस्संदेह, यह कदम हमें एक सुरक्षित, पारदर्शी और सशक्त डिजिटल भविष्य की दिशा में अग्रसर करेगा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

पं दीनदयाल उपाध्याय की शहादत को समर्पित भाजपा ने निकाली बाइक रैली

अमृतसर 11 फरवरी (साहिल बेरी)

भारतीय जनसंघ (वर्तमान भाजपा) के तत्कालीन अध्यक्ष पं दीनदयाल उपाध्याय की शहादत को समर्पित छेहरटा मंडल अध्यक्ष सतीश पुंज की अध्यक्षता में छेहरटा चौंक से लेकर इंडिया गेट तक बाइक रैली का आयोजन किया गया। इस मौके पूर्व सीपीएस तथा अमृतसर प्रभारी के.डी भंडारी, जिलाध्यक्ष हरविंदर सिंह संधू, हल्का केंद्रीय इंचार्ज राम चावला, हल्का पश्चिमी इंचार्ज एडवोकेट कुमार अमित, भाजपा नेता डॉ सुशील देवगन ने विशेष तौर पर पहुंच कर रैली को रवाना किया।

इस मौके उक्त नेताओं ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय सन 1953 से 1968 तक भारतीय जनसंघ के नेता रहे। एक गम्भीर दार्शनिक एवं गहन चिंतक होने के साथ-साथ वह एक ऐसे समर्पित संगठनकर्ता और नेता थे, जिन्होंने सार्वजनिक जीवन में व्यक्तिगत शुचिता एवं गरिमा के उच्चतम आयाम स्थापित किए।

भारतीय जनता पार्टी की स्थापना के समय से ही वह इसके वैचारिक मार्गदर्शक और नैतिक प्रेरणा-स्रोत रहे हैं। उनका राजनीतिक दर्शन मानव मात्र की आवश्यकताओं के अनुरूप और हमारे प्राकृतिक आवास के अनुकूल राजनीतिक कार्यप्रणाली एवं शासकीय कौशल का मार्ग प्रशस्त करने वाला एक चहुंमुखी वैकल्पिक जीवन दर्शन है। 'अनेकता में एकता और विभिन्न रूपों में एकता की अभिव्यक्ति भारतीय संस्कृति की सोच रही है'।

इस मौके अविनाश शैला, अनिल कुमार दारा, लेबर सेल के प्रदेश कन्वीनर अश्वनी शर्मा, यूथ मंडल अध्यक्ष विशाल शर्मा, शेखर मेहता, मनजीत मिंटा, शैंकी अरोड़ा, खंडवाला मंडल अध्यक्ष सन्नी शर्मा, दर्शन लाल हजूरी, लवी शर्मा, रमन पंडित, रघु पंडित, बंटी पंडित, लखविंदर सिंह आदि मौजूद थे।

हथियार तस्करी वाले माड्यूल से सम्बन्धित दो व्यक्ति 5 अति-आधुनिक पिस्तौलों समेत अमृतसर से गिरफ्तार

दोनों आरोपी आसानी के साथ पैसा बनाने के इरादे के साथ नशे और हथियारों की तस्करी करते थे: सीपी अमृतसर गुरप्रीत भुल्लर

अमृतसर, 11 फरवरी (साहिल बेरी)

मुख्य मंत्री भगवंत सिंह मान के दिशा- निर्देशों पर पंजाब को गैंगस्टर मुक्त बनाने के लिए शुरु की गई 'गैंगस्टरा ते वार 'मुहिम में एक बड़ी सफलता हासिल करते अमृतसर कमिश्नरेट पुलिस ने हथियारों की तस्करी करने वाले माड्यूल का पर्दाफाश करके पांच आधुनिक पिस्तौलों समेत दो आरोपियों को गिरफ़्तार किया है। यह जानकारी आज यहां डायरैक्टर जनरल आफ पुलिस (डीजीपी) पंजाब गौरव यादव ने दी।

गिरफ़्तार किए गए व्यक्तियों की पहचान रोहित अरोड़ा (25), जो कि अमृतसर के गिलवाली गेट का रहने वाला है और अमृतसर के गांव मीराकोट कलां निवासी हरप्रीत सिंह उर्फ हैपी (24) के तौर पर हुई है। बरामद किए गए पिस्तौलों में तीन 9 एमएम गलौक और दो. 30 बोर पिस्तौल शामिल है।

डीजीपी गौरव यादव ने कहा कि प्राथमिक जांच से यह सामने आया है कि उक्त आरोपी सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के द्वारा पाकिस्तान आधारित तस्करों के संपर्क में थे। उन्होंने कहा कि हथियारों की खेप ड्रोन के द्वारा भेजी जा रही थी और मुलजिम अपने हैंडलरों के निर्देशों पर इनको आगे स्पलाई करते थे।

डीजीपी ने कहा कि हथियारों के इस ग़ैर- कानूनी नैटवर्क में अगले-पिछले संबंधों का पता लगाने के लिए आगे वाली जांच जारी है।

पुलिस कमिश्नर (सीपी) अमृतसर गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने बताया कि भरोसेयोग सूत्रों से मिली गुप्त जानकारी के आधार पर कार्यवाही करते पुलिस टीमों ने एक योजनाबद्ध आप्रेशन चलाया और आरोपी रोहित अरोड़ा, जो कि गैंगस्टर सोनू कंगला का नज़दीकी साथी है, को गिरफ़्तार कर लिया। उन्होंने कहा कि तलाशी दौरान मुलजिम के कब्ज़े में से तीन पिस्तौल- जिस में एक गलौक पिस्तौल और दो . 30 बोर पिस्तौल शामिल हैं, बरामद किए गए।

पुलिस कमिशनर ने बताया कि पूछताछ दौरान आरोपी रोहित अरोड़ा की तरफ से किए गए खुलासों के आधार पर एक ओर आरोपी हरप्रीत सिंह उर्फ हैपी को भी दो गलौक पिस्तौलों समेत गिरफ़्तार कर लिया गया। उन्होंने आगे कहा कि दोनों आरोपी आदतन अपराधी है जिन पर बंदूक की नोक पर लूट- छीन, जेल एक्ट, हथियार एक्ट और एनडीपीएस एक्ट के अंतर्गत पहले भी कई केस दर्ज है और उक्त दोनों आसानी के साथ पैसा बनाने (इजी मनी) के इरादे के साथ नशों- हथियारों की तस्करी करते रहे है।

इस सम्बन्ध में अमृतसर के थाना गेट हकीमा में हथियार एक्ट की धाराओ 25, 6 ,7 और 8 के अंतर्गत एफआईआर नंबर 33 तारीख़ 06-02- 2026 दर्ज है।

ड्रग्स के खिलाफ जंग 2.0 में चेयरमैन रिंटू द्वारा उत्तरी विधानसभा क्षेत्र में मीटिंग करवा कर लोगों को किया जागरूक

रिंटू ने कहा "ड्रग्स के खिलाफ जंग- फ्री हलका नॉर्थ" कैंपेन लगातार जारी रहेगी

अमृतसर, 11फरवरी (साहिल बेरी)

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान की लीडरशिप में गांव के चौकीदारों की देखरेख में चल रहे ड्रग्स के खिलाफ जंग 2.0 के तहत इंप्रूवमेंट ट्रस्ट अमृतसर के चेयरमैन एवं उत्तरी विधानसभा क्षेत्र से आम आदमी पार्टी के इंचार्ज करमजीत सिंह रिंटू ने मजीठा रोड ऑफिस में बीडीसी मेंबर्स के साथ "ड्रग्स के खिलाफ जंग- फ्री हलका नॉर्थ" कैंपेन के बारे में एक बहुत ज़रूरी मीटिंग की। उन्होंने कहा कि ड्रग के खिलाफ जंग की कैंपेन लगातार जारी रहेगी।

करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि ड्रग्स के खिलाफ लगातार सेमिनार आयोजित किया जा रहे हैं और वॉक निकाली जा रही हैं, ताकि ड्रग्स को रोका जा सके और इसे जड़ से खत्म किया जा सके। उन्होंने कहा कि पुलिस द्वारा भी ड्रग्स के खिलाफ युद्ध स्तर पर अभियान छेड़ा हुआ है। जिसके तहत प्रतिदिन भारी संख्या में नशीला पदार्थ हेरोइन बरामद करके तस्करों को गिरफ्तार किया जा रहा है।

रिंटू ने कहा कि पंजाब की आम आदमी पार्टी की सरकार का मुख्य मकसद राज्य को ड्रग-फ्री बनाना है। उन्होंने कहा कि सरकार ड्रग्स के खिलाफ ज़ीरो टॉलरेंस पॉलिसी पर काम कर रही है और किसी भी ड्रग तस्कर को बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने कहा कि इसके साथ ही, युवाओं को ड्रग्स के नुकसान के बारे में जागरूक करने के लिए एक ड्रग डिटॉक्सिफिकेशन यात्रा भी निकाली जा रही है।

इस अवसर पर एसीपी नॉर्थ गगनदीप सिंह ने कहा कि पुलिस द्वारा लगातार ड्रग तस्करों के विरुद्ध कार्रवाइया की जा रही है। उन्होंने कहा कि ड्रग्स बेचने वालों के विरुद्ध जानकारी देने वाले लोगों के नाम गुप्त रखे जाते हैं। उन्होंने कहा कि लोग पुलिस को ड्रग्स के खिलाफ जानकारियां उपलब्ध करवाते रहे। इस अवसर पर सीनियर डिप्टी मेयर प्रियंका शर्मा, बीडीसी सदस्य हल्का नॉर्थ, थाना प्रभारी और भारी संख्या में आम आदमी पार्टी के वालंटियर मौजूद थे।

मेयर प्रत्याशी रवि केसरी ने धूमधाम से किया चुनाव कार्यालय का शुभ उद्घाटन

परिवहन विशेष न्यूज

देवघर । स्थानीय बैधनाथधाम रेलवे स्टेशन रोड अवस्थित होटल न्यू ग्रेन्ड परिसर में मेयर प्रत्याशी रवि केसरी ने शहर में मुख्य चुनाव कार्यालय का विधिवत उद्घाटन किया। मौके पर रवि केसरी ने कहा कि हमें जनता का अपार जन समर्थन मिल रहा है, जो जन सेवा, विकास और सकारात्मक बदलाव का संकेत है। साथ ही, उन्होंने कहा कि यह हमारे सकारात्मक सोंच, उत्साह और ऊर्जा को बढ़ायेंगा। मौके पर भारी संख्या में समाजसेवी, नगरवासी, गणमान्य लोग और मिडिया पत्रकार बन्धु मौजूद थे। श्री केसरी ने देवघर नगरनिगम के देवतुल्य मतदाताओं से अपने पक्ष में मतदान करने की अपील की।

बस्तियों पर बुलडोज़र, पूंजीपति पर रहम! नगर विधायक के दोहरे रवैये पर उठे सवाल

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला: शहर में हाल के दिनों में हुए अतिक्रमण हटाओ अभियानों को लेकर स्थानीय राजनीति गरमा गई है। सिविल टाउन के मानटोला बस्ती, बीपीयूटी बस्ती और बंडामुंडा क्षेत्र में जब प्रशासन ने बुलडोज़र चलाकर हजारों गरीबों के घर तोड़ दिए, तब राउरकेला के विधायक शारदा प्रसाद नायक कहीं नजर नहीं आए। न तो पीड़ितों को उनका सहारा मिला, न ही उनका "दर्शन" हो सका।

लेकिन 9 फ़रवरी सोमवार को स्थिति कुछ और ही देखने को मिली। जैसे ही एक कथित पूंजीपति की इमारत पर कार्रवाई शुरू हुई, विधायक शारदा प्रसाद नायक खुद मौके पर पहुंच गए। इतना ही नहीं, वे जेसीबी मशीन पर चढ़ते नजर आए और भवन तोड़ने में इस्तेमाल हो रही छेनी-हथौड़ी तक हटाने के लिए खुद आगे बढ़ गए। इस घटनाक्रम ने शहर में एक नई बहस को जन्म दे दिया है।

स्थानीय लोगों और सामाजिक कार्यकर्ताओं का आरोप है कि विधायक ने बस्तीवासियों के वोट लेकर चुनाव तो जीत लिया, लेकिन संरक्षण केवल पूंजीपतियों को दिया जा रहा है। गरीब बस्तियों के उजड़ने पर चुप्पी और रसूखदारों के मामले में सक्रियता—क्या यह जनप्रतिनिधि के दोहरे चरित्र और नीयत को उजागर नहीं करता?

इन घटनाओं के बाद राउरकेला में यह सवाल जोर पकड़ रहा है कि क्या विकास की कीमत केवल गरीब ही चुकाएंगे? क्या जनप्रतिनिधियों की जिम्मेदारी सभी वर्गों के लिए समान नहीं होनी चाहिए?

शहर की जनता अब जवाब मांग रही है—

आखिर राउरकेला विधायक शारदा प्रसाद नायक का यह दोहरा रवैया क्यों?

वहीं जानकारों का मानना है कि उक्त बिल्डिंग में आखिर ऐसा क्या राज था कि विधायक व पूर्व मंत्री ओड़िशा सरकार को सड़क पर बैठना पड़ा 1 कई लोगों ने कहा काले धन की आसंका से भी इन्कार नहीं किया जा सकता 1 वहीं संलग्न शोरूम की खरीद में साझेदारी को भी लेकर चर्चाओं का बाजार गर्म है 1 वहीं बिना दस्तावेज के दुकान पर जीएसटी नम्बर कैसे? बिना होल्डिंग टैक्स के होटल जैसा व्यापार चलाने देने का जिम्मेदार कौन अन्य कागजात जैसे फायर लाइसेंस व अन्य दस्तावेजों की बात दुर 1

नाजायज़ कॉलोनियों और अवैध निर्माण के खिलाफ मेयर सख्त, एम.टी.पी. विभाग के अधिकारियों के साथ विशेष बैठक

अमृतसर, 11 फरवरी (साहिल बेरी)

आज दिनांक 11-02-2026 को मेयर श्री जतिंदर सिंह भाटिया द्वारा एम.टी.पी. (MTP) विभाग के समस्त अधिकारियों के साथ एक विशेष बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में एम.टी.पी., ए.टी.पी., ड्राफ्ट्समैन तथा बिल्डिंग इंस्पेक्टर विशेष रूप से उपस्थित रहे।

बैठक के दौरान मेयर ने अमृतसर शहर में बन रही नाजायज़ कॉलोनियों तथा भवन निर्माण नियमों के उल्लंघन (Violations) संबंधी वर्तमान स्थिति की विस्तृत जानकारी ली। इस अवसर पर एम.टी.पी. मेहरबान सिंह ने बताया कि ऐसी अवैध निर्माण गतिविधियों के संबंध में विभाग द्वारा पहले ही नोटिस जारी किए जा चुके हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि नियमों का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों द्वारा कार्य तुरंत बंद नहीं किया गया, तो विभाग द्वारा सख्त कार्रवाई अमल में लाई जाएगी और आवश्यकता पड़ने पर डिमोलिशन (ध्वस्तीकरण) अभियान भी चलाया जाएगा।

बैठक के दौरान विभाग द्वारा फील्ड स्टाफ की कमी का मुद्दा भी मेयर के समक्ष रखा गया। इस पर मेयर ने अधिकारियों को आश्वस्त किया कि उनकी इस समस्या का शीघ्र समाधान किया जाएगा।

मेयर ने सख्त निर्देश दिए कि शहर के योजनाबद्ध विकास में किसी भी प्रकार का अवैध निर्माण बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने अधिकारियों को सतर्क रहने के निर्देश देते हुए कहा कि अगली समीक्षा बैठक में पिछले तीन महीनों के दौरान स्वीकृत किए गए आवासीय एवं व्यावसायिक नक्शों, जारी एन.ओ.सी. (NOC), अवैध निर्माण, सील की गई संपत्तियों तथा नियम उल्लंघन से संबंधित पूर्ण रिपोर्ट और विस्तृत विवरण सहित उपस्थित होना सुनिश्चित किया जाए।

इस बैठक में एम.टी.पी. मेहरबान सिंह, ए.टी.पी. परमिंदरजीत सिंह, वरिंदर मोहन, अंगद सिंह, कुलवंत सिंह, मनजीत सिंह, किरणजीत कौर, कुलविंदर कौर, प्रिया सहगल तथा बिल्डिंग इंस्पेक्टर नितिन धीर, माधवी, सोनिका मल्होत्रा, विकास गौतम, हेड ड्राफ्ट्समैन सुमित कुमार और नवदीप सिंह सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

संत लोंगोवाल इंस्टीट्यूट और आई.आई.टी जोधपुर के बीच महत्वपूर्ण समझौता हुआ

लोंगोवाल, 11 फरवरी (जगसीर सिंह) – संत लोंगोवाल इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (डीम्ड-यूनिवर्सिटी) स्लाइट लोंगोवाल, जो पंजाब के मालवा इलाके में भारत सरकार का एक बहुत बड़ा टेक्निकल इंस्टीट्यूट है, ने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी जोधपुर के साथ एक महत्वपूर्ण समझौता साइन किया है। इस एग्रीमेंट पर इंस्टीट्यूट के निर्देशक प्रो. मणि कांत पासवान और आई.आई.टी जोधपुर के निर्देशक प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल ने साइन किए। यह एग्रीमेंट प्रो. रवि कांत मिश्रा, डीन एलुमनाई और इंडस्ट्रियल रिलेशंस और प्रो. सुरिंदर सिंह, डीन रिसर्च एंड कंसल्टेंसी की लगातार की गई कोशिशों के कारण संभव हो पाया। इस एग्रीमेंट के तहत, संत लोंगोवाल इंस्टीट्यूट के उन काबिल बी.टेक. स्टूडेंट्स को, जिनका सीजीपीए 8.0 या उससे ज़्यादा है और जिन्होंने क्लास में टॉप-10 रैंक हासिल की है, उन्हें बिना गेट के आई आई टी जोधपुर में एडमिशन दिया जाएगा। जोधपुर में इंटरव्यू के आधार पर डायरेक्ट पी एच डी एडमिशन मिलेगा और शुरुआती पी एच डी एडमिशन के मौके पांचवें सेमेस्टर के बाद मिलेंगे। इस समय प्रो. हरि मोहन अरोड़ा रजिस्ट्रार, प्रो. वी. के .कुकरेजा डीन स्टूडेंट्स वेलफेयर, प्रो. ए एस शाही डीन एकेडमिक, प्रो. कमलेश प्रसाद डीन फैकल्टी और एम्प्लॉई वेलफेयर आदि मौजूद थे।

पद्म विभूतियों को झारखंड सरकार देगी सम्मान राशि जहां पद्म शहर सरायकेला उपेक्षित

तीन किलोमीटर दायरे के शहर में 7 पद्मश्री यहां पद्म देने वाला राजमहल घोर उपेक्षा का शिकार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड सरकार पद्म पुरस्कार प्राप्त झारखंड के विभूतियों को सम्मान राशि देने पर विचार कर रही है. ताकि उन्हें आर्थिक संबल प्राप्त हो. परंतु सच इतनी भयावह है कि उसको पाटना उतना सहज नहीं है। झारखंड का स्थित पद्म सहर सरायकेला में सात सात पद्मश्री है जो सरायकेला का विश्व प्रसिद्ध छऊ के लिए मिले हैं। जिस सैन्य छावनी से आया मार्शल आर्ट युक्त छऊ है उसके उद्गम स्थल सरायकेला पैलेस को सरकार पुछती तक नहीं। करोड़ों रुपये मुल्य धरोहर का यह महल आज बिल्कुल उपेक्षित है। जहां राजकुमार से लेकर प्रजा तक विदेशों में अपनी विरासत की अमूल्य कला को ले जाकर नाचते थे, और दुनिया देख आश्चर्यचकित थी। झारखंड सरकार आगामी बजट में इस विषय को लेकर बजटीय प्रावधान करेगी. राज्य सरकार का प्रयास है कि आर्थिक चुनौतियों से जूझ रहे पद्म पुरस्कारों से सम्मानित राज्य के विशिष्ट नागरिकों को आर्थिक संबल प्राप्त हो साथ ही उनका मनोबल बढ़े. इस योजना द्वारा राज्य की कला, खेल, समाज सेवा, पर्यटन व संस्कृति को बढ़ावा देने वाले लोगों का समान देना है. खबरों के अनुसार पर्यटन, कला, संस्कृति खेलकूद एवं युवा कार्य मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने विभाग को इसे लेकर बजटीय प्रावधान करने का निर्देश दिया है.

इस कदम द्वारा राज्य सरकार राज्य की उन विभूतियों को जिन्होंने झारखंड का नाम रोशन किया है उन्हें आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना चाहती है. इस पहल से उन्हें सम्मान के साथ-साथ अन्य लोगों को प्रोत्साहन भी मिलेगा. झारखंड की महान विभूतियों में रामदयाल मुंडा, शिबू सोरेन, साइमन उरांव, महेंद्र सिंह धोनी, शशधर आचार्य, छुटनी देवी, मुकुंद नायक, मधु मंसूरी, महावीर नायक, जमुना टुडू, दीपिका कुमारी, प्रेमलता अग्रवाल जैसे लोग पद्म पुरस्कारों से सम्मानित हैं. इन सभी ने कला, संस्कृति, साहित्य, खेल व समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान दिया है.

अगर बात पद्मश्रियों की नहीं देश मे पद्म शहरों की की जाय तो नाम सरायकेला का आयेगा। यहां तीन किलोमीटर दायरे तथा उस राज्य के कोने कोने में सात सात पद्मश्री धारी रहते है (कुछ गुज़र गये है)। पद्मश्री के मामले में यह दुनियां में विरले है जहां इतने पद्म नहीं देखेजाते। परंतु जिस महल ने इस अद्भुत कला को जन्म दिया वह सरायकेला का राजमहल घोर उपेक्षित है इस धरोहर आज ढोने के कागार पर है। पर कभी ओडिशा से बिहार लाकर रखे गये सरायकेला राज्य ने अपनी सामरिक छऊ नृत्य कला को दिया है, जो बंगाल भी गया और ओडिशा भी। ओडिशा सरकार पदम धारी विभूषित विभूतियों को मानदेय देती और तो और राजकीय पैलेसों को संरक्षण उपाय भी करती पर सरायकेला में ऐसा नहीं होता। जो घोर दुर्भाग्य जनक बात है उसके जन्म दाता ओडिया समुदाय के लिए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023